गौ रक्षक दल

गौ सुषमा

ऑनलाईन संस्करण: श्रेष्ठभारत

नपुंसकता त्यागे

गौमाता को बचाये

अपने सुझाव इस पते पर भेजे !

www.shreshthbharat.in/contacts

ShresthBharat | गौ रक्षक दल | स्वदेशी भारत | DesiMitti

१. गायों ने की प्राणों की रक्षा

रोहित के सरल मन में उठनेवाले सरल प्रश्नों से उसके मित्र परेशान रहते थे।

अरुण ! गाय को माँ क्यों कहते हैं?

बुद्धू ! इतना भी नहीं पता, गाय हमें दूध देती है?

इस उत्तर पर रोहित को मजाक सूझा।

लो यह दूध देनेवाली भैंस माँ आ गई।

भैंस को माँ थोड़े ही कहा जाता है?

रोहित ने फिर प्रश्न दागा।

क्यों भैंस भी तो हमें दूध देती है? फिर उसे माँ क्यों नहीं कहते?

माँ का पद तो गाय को मिल गया। फिर भैंस को माँ कैसे कहेंगे?

रोहित के मन में नया प्रश्न उठा।

अच्छा, भैंस को मौसी कहें तो?

भैंस मौसी ! हा.. हा..हा !!

रोहित के प्रश्न पर सबको मजा आ गया। बकरी को देख

बकरी माँ! हा..हा..हा !!

बकरी मौसी! हा..हा..हा !!

अरुण समझ गया कि रोहित का प्रश्न इतना सरल नहीं है।

चलो, श्रीदामा ग्वाले से पूछते हैं।

दामू भैया! गाय को माँ क्यों कहते हैं?

एक दिन की बात है-मैं गाय-भैंस-बकरियों को चरा रहा था।

अचानक एक नरभक्षी बाघ ने मुझ पर आक्रमण कर दिया।

बचाओ! बचाओ !!

भैंसे-बकरियाँ भाग गईं। जबकि गायों ने मुझे घेरकर उस पर आक्रमण कर दिया।

कुछ गायें घायल हो गईं।

आखिर उसे भागना पड़ा।

गाय माँ की तरह अपने प्राणों की चिंता न कर हमारी रक्षा करती है, इसलिए हम उसे माँ कहते हैं।

बछड़े को संस्कृत में वत्स कहते हैं। वत्स से ही बना है वात्सल्य अर्थात् माँ का प्रेम।

२. तेनालीराम

एक राजा दूसरे राजा के विद्वानों की परीक्षा लेने के लिए अपने विद्वानों को उनके दरबार में भेजते थे। एक बार राजा कृष्णदेवराय के दरबार में एक विद्वान ने बहुत से प्रश्न पूछे। अंत में

किस पशु का दूध सबसे श्रेष्ठ है?

गाय का।

तेनालीराम खड़े होते हैं।

बकरी का।

तेनालीराम! होश में तो हो?

शायद आपने मेरा प्रश्न ठीक से नहीं सुना?

हा..हा..हा!!

क्षमा करें महोदय। आपने पशु के दूध के बारे में पूछा, इसलिए मैंने बकरी कहा। गाय पशु नहीं वह तो माँ है।

बहुत सुंदर!

वाह!

उत्तम!!

वाह! केवल बाहरी ज्ञान प्राप्त विद्वान ऐसा उत्तर नहीं दे सकते, भीतरी ज्ञान अर्थात् प्रज्ञासंपन्न व्यक्ति ही इतना सुंदर उत्तर दे सकते हैं। जहाँ प्रज्ञावान पुरुष होते हैं, उन्हें कोई नहीं जीत सकता।

वर्षों तक माता-पिता, संतों और गोमाता की सेवा, ईश्वर की सेवा मानकर करने पर प्रज्ञा जागती है। स्वयं को श्रेष्ठ मानकर सेवा करने से अहंकार बढ़ता है और प्रज्ञा लुप्त हो जाती है।

३. जैसा दूध वैसा पूत

गणेशन् आज फिर दुखी था। १० वर्षों में तीसरी बार उसकी भैंसे गुम गई और लाखों रुपयों का नुकसान हो गया।

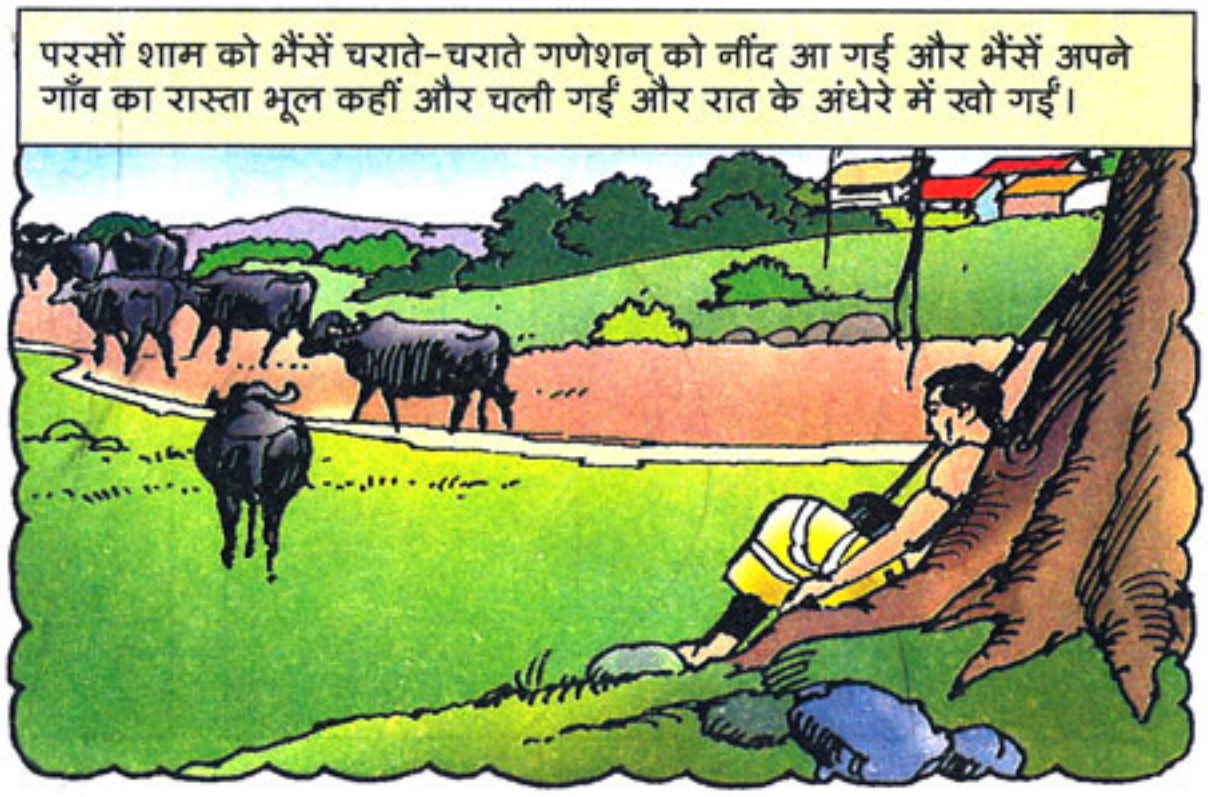
परसों शाम को भैंसें चराते-चराते गणेशन् को नींद आ गई और भैंसें अपने गाँव का रास्ता भूल कहीं और चली गईं और रात के अंधेरे में खो गईं।

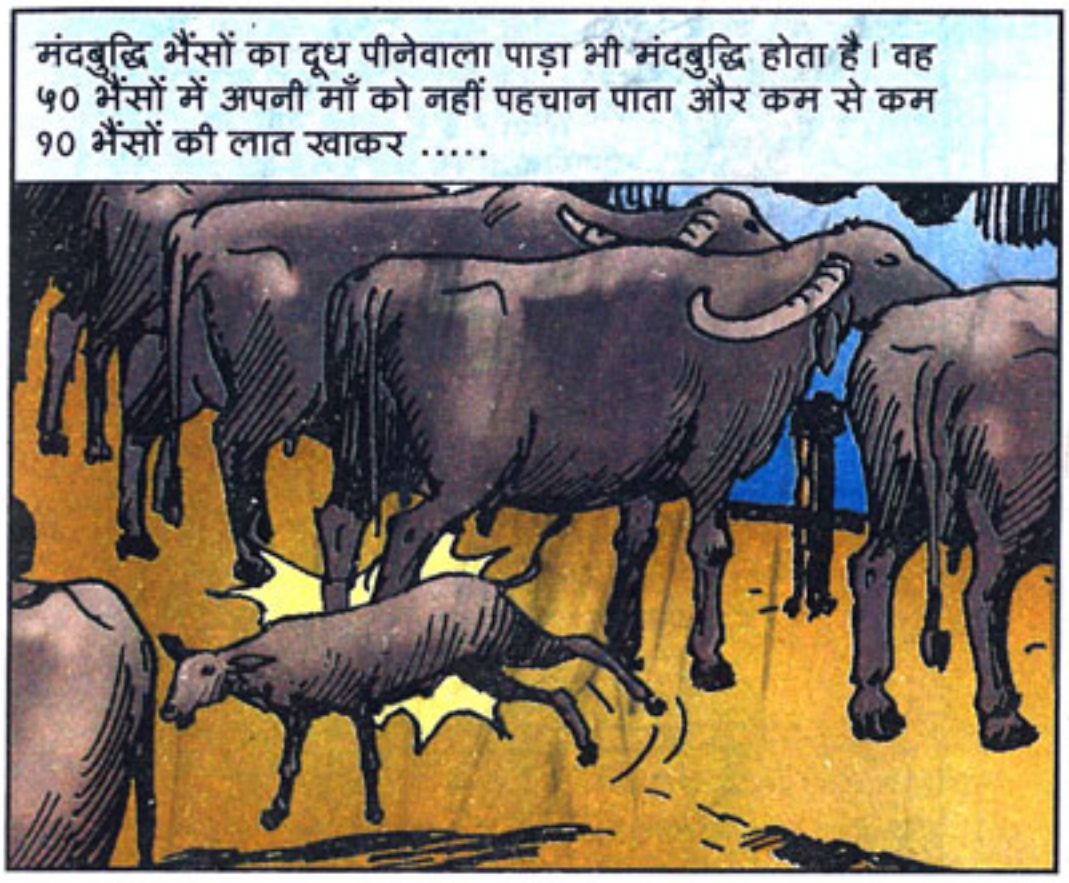
मंदबुद्धि भैंसों का दूध पीनेवाला पाड़ा भी मंदबुद्धि होता है। वह ५० भैंसों में अपनी माँ को नहीं पहचान पाता और कम से कम १० भैंसों की लात खाकर .....

..... अपनी माँ के पास पहुँचता है।

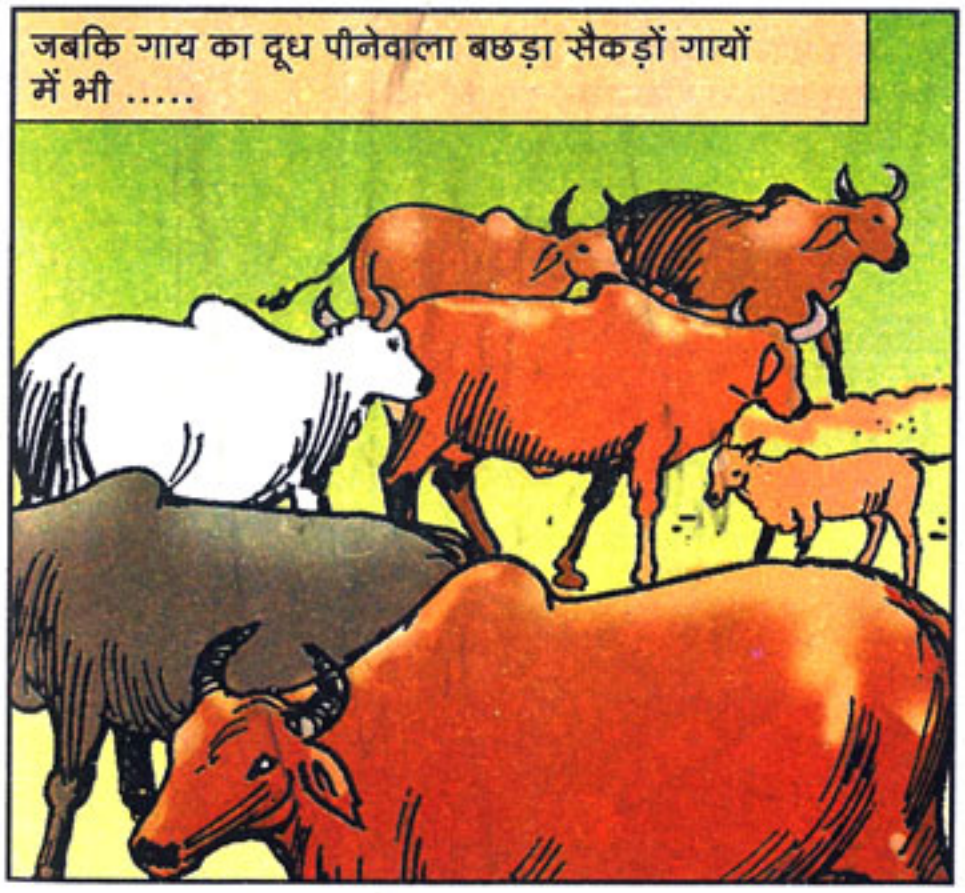
जबकि गाय का दूध पीनेवाला बछड़ा सैकड़ों गायों में भी .....

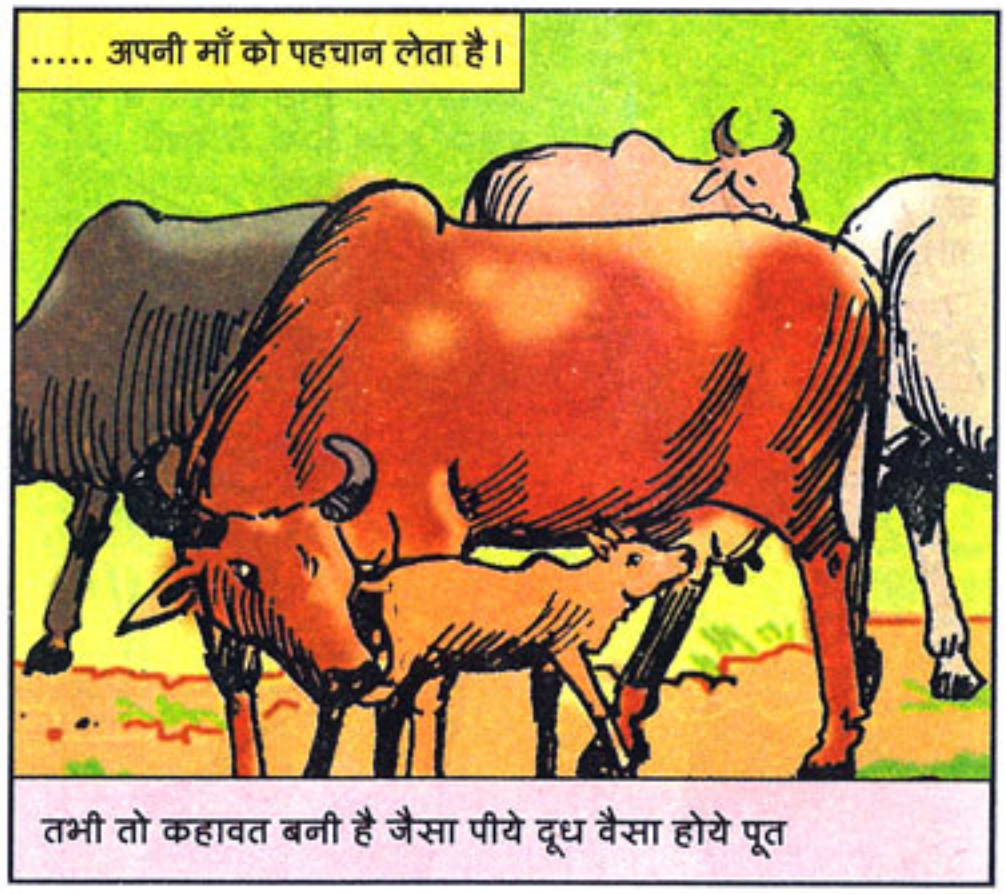
..... अपनी माँ को पहचान लेता है।
तभी तो कहावत बनी है जैसा पीये दूध वैसा होये पूत

सुनील की गाय को साहूकार जबर्दस्ती शहर ले गया था, लेकिन एक महीने बाद भी वह रस्सी तुड़ाकर आ गई।

मेरी गौरी आ गई, ५० कि.मी. दूर से मेरी गाय आ गई।

ऐसे ही गाय और भैंस का दूध पीनेवालों में भी अंतर होता है। शिवाजी गाय का दूध पीते थे।

शिवा! हमारी भूमि पर अत्याचार करनेवाले इन धर्मांध शासकों को तुझे हटाना होगा।

माँ! मैं तुझे वचन देता हूँ।

शिवाजी महाराज आखिरी समय तक माँ और मातृभूमि के ऋण को नहीं भूले।

गुड्डू भैंस का दूध पीकर बड़ा हुआ था।

माँ! मुझे विदेश में अच्छी नौकरी मिल गई है। मुझे यहाँ की नागरिकता भी मिल गई है। अब मैं यहाँ ही रहूँगा। रुपये भेजता रहूँगा, नौकर से अपनी सेवा करवा लेना।

गुड्डू! तू अपना ध्यान रखना।

कुछ वर्षों बाद

गुड्डू! मेरी तबियत बहुत खराब है। एक बार तुझे देखने के लिए आँखें तरस रही हैं।

माँ! मैं बहुत व्यस्त हूँ। आ नहीं सकता। किसी अच्छे डॉक्टर से इलाज करवा लेना, मैं रुपये भेज रहा हूँ।

माँ बार-बार फोन करती रही, लेकिन प्रेमहीन भैंस का दूध पीकर बड़े हुए बेटे को माँ की पीड़ा समझ में नहीं आई और एक दिन ....

गुड्डू-गुड्ऽऽ

बेटे को याद करते-करते माँ ने प्राण त्याग दिये।

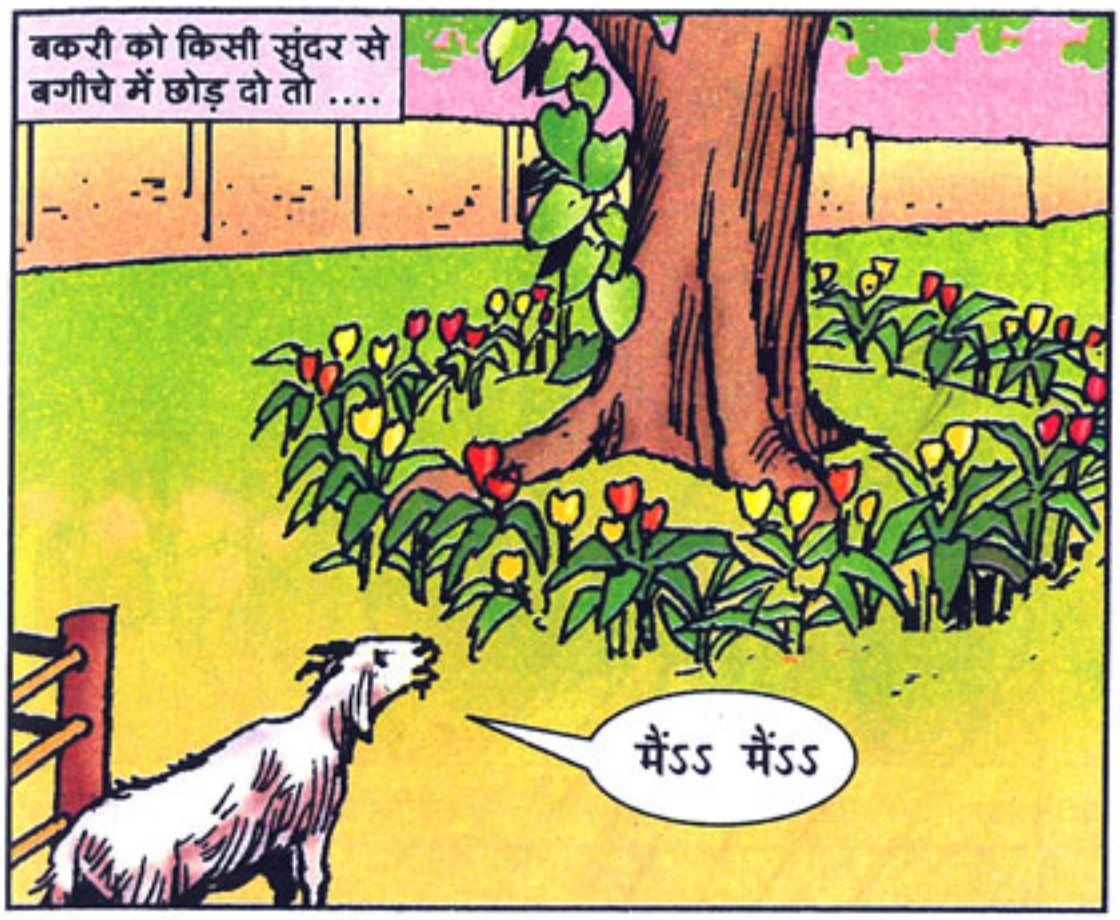
बकरी को किसी सुंदर से बगीचे में छोड़ दो तो ....
मैंऽऽ मैंऽऽ

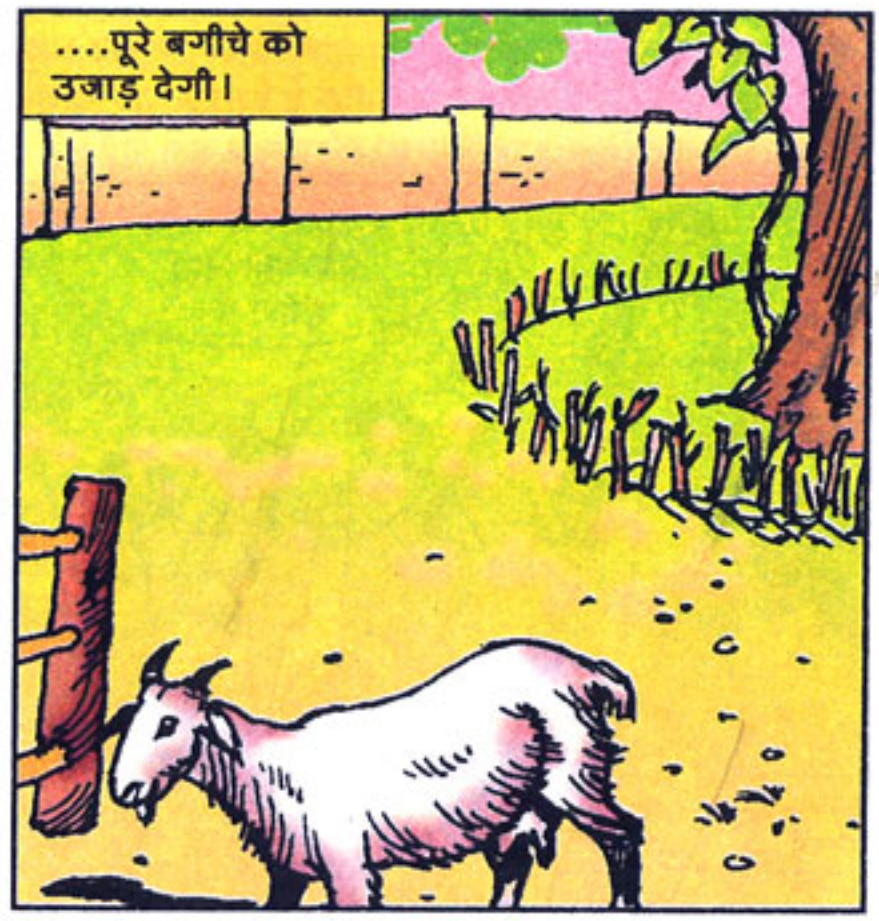
....पूरे बगीचे को उजाड़ देगी।

मनुष्य की भीतरी सुषमा ही बाहर उत्तम सभ्यताओं के रूप में प्रकट हुई, लेकिन बकरी का दूध पीनेवाले अपनी 'मैं-मैं' में इतने अंधे हो गये कि इंसान के भीतर झाँकना तो दूर, उन्होंने इंसान को इंसान ही नहीं समझा और उन्हें अपनी बात कहने का मौका दिये बिना ही उजाड़ दिया।
मार डालो और इनकी संपत्ति पर कब्जा कर लो।
ईसाइयों ने अमेरिका में 10 करोड़ से भी अधिक रेड इंडियनों की हत्या कर दी।

कालों पर भयंकर अत्याचार
जो भी ज्यादा बीमार हो, उसे गोली मार दो।
जल्दी-जल्दी काम कर, नहीं तो तुझे भी गोली मार दूँगा।

कनाडा, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और बहुत से देशों के मूलवासियों का सफाया

दो विश्व युद्ध
हिरोशिमा व नागासाकी पर परमाणु बम का प्रयोग

ईसामसीह का जन्म उस धरती पर हुआ जहाँ लोग प्रायः बकरी का दूध ही पीते थे। ये लोग ईसामसीह से प्रभावित हुए, उनके अनुयायी बने लेकिन अपने पैगम्बर को समझ नहीं पाये।

सबकी सेवा और प्रेम यही मेरा संदेश है।

हे प्रभु! इन्हें क्षमा करना, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं?

अपराधियों तक का भला चाहनेवाले करुणामूर्ति ईसामसीह के अनुयायियों ने निरपराधों का नरसंहार किया।

दूसरी ओर मजहब के नाम पर ईरान, अफगानिस्तान, तुर्क, मिस्र, इंडोनेशिया आदि देशों को मुसलमान बना लिया गया और वहाँ की संस्कृतियों का भी नाश कर दिया।

जहाँपनाह! तलवार के बल पर हिंदुस्तान के भी एक बड़े हिस्से को हमने मुसलमान बना लिया।

बहुत से विश्वविद्यालयों- पुस्तकालयों को जला दिया गया।

तालिबानियों ने आतंकवाद फैलाया।

औरंगजेब ने इस्लाम के नाम पर अपने पिता को कैद कर लिया, भाइयों की हत्या कर दी और

अब भी मौका है, मुसलमान बन जाओ, सारी जिंदगी ऐश करोगे।

जो धर्म बेचते हैं और जो खरीदते हैं, जो डराते हैं और जो डरते हैं, वे दोनों ही नहीं जानते कि धर्म क्या है।

गुरु गोविंदसिंह के दोनों वीर बालक फतेहसिंह-जोरावरसिंह जिंदे ही दीवार में चुन दिये गये।

बुद्ध की मूर्तियों को उड़ा दो।

महान पैगम्बरों के अनुयायियों की इस हैवानियत को देख क्रांतिकारी विचारक कार्ल मार्क्स को कहना पड़ा

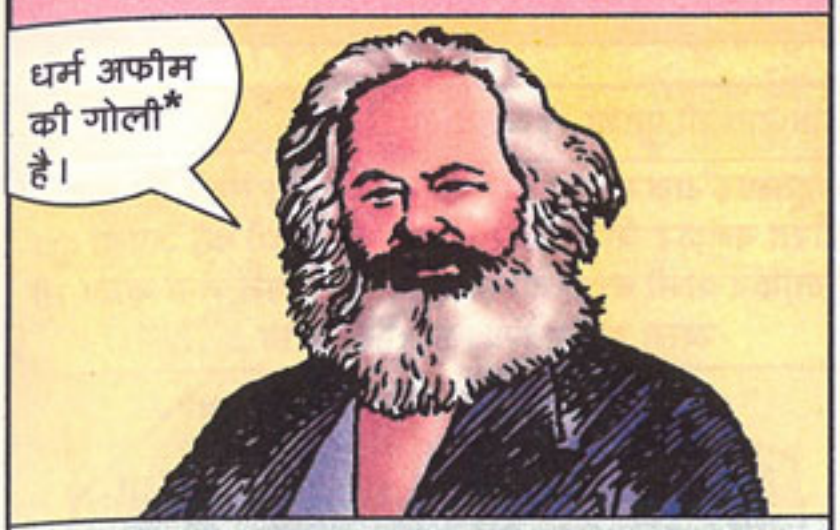

इस वाक्य के प्रभाव से पैगम्बरों के करोड़ों अनुयायी नास्तिक हो गये। यह विश्व का दुर्भाग्य रहा कि मार्क्स को भारत के अध्ययन का मौका नहीं मिला, नहीं तो वे ऐसा कहकर मानवता का अहित न करते।

''गाय में सभी देवताओं का वास है। गाय के तृप्त होने से सभी देवता तृप्त होते हैं। इसी कारण गाय का मल भी गो वर (वरदान) और पवित्र करनेवाला बन गया। गाय की सेवा भी यज्ञ है। ऋषियों के ज्ञान का प्रचार कर ऋषि-ऋण से मुक्त हुआ जाता है।''

अजमेर में सूफी ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है।

मोईनुद्दीन चिस्ती अकबर का राजनितिक गुरु था, अकबर द्वारा चितौड़ के किल्ले मे किये २८००० किसानो के नरसंहार और तथाकथित जीत की याद मे चितोड़ दुर्ग द्वार दरगाह को भेंट किया

गाय का दूध पीनेवालों ने कभी किसी को नहीं सताया, बल्कि प्रचार किया 'वसुधैव कुटुम्बकम्' - पूरा विश्व ही परिवार है।

शिकागो धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद के मुँह से निकले इस प्रेम भरे संबोधन ने सभी के हृदय को जीत लिया।

ऋषियों ने कहा

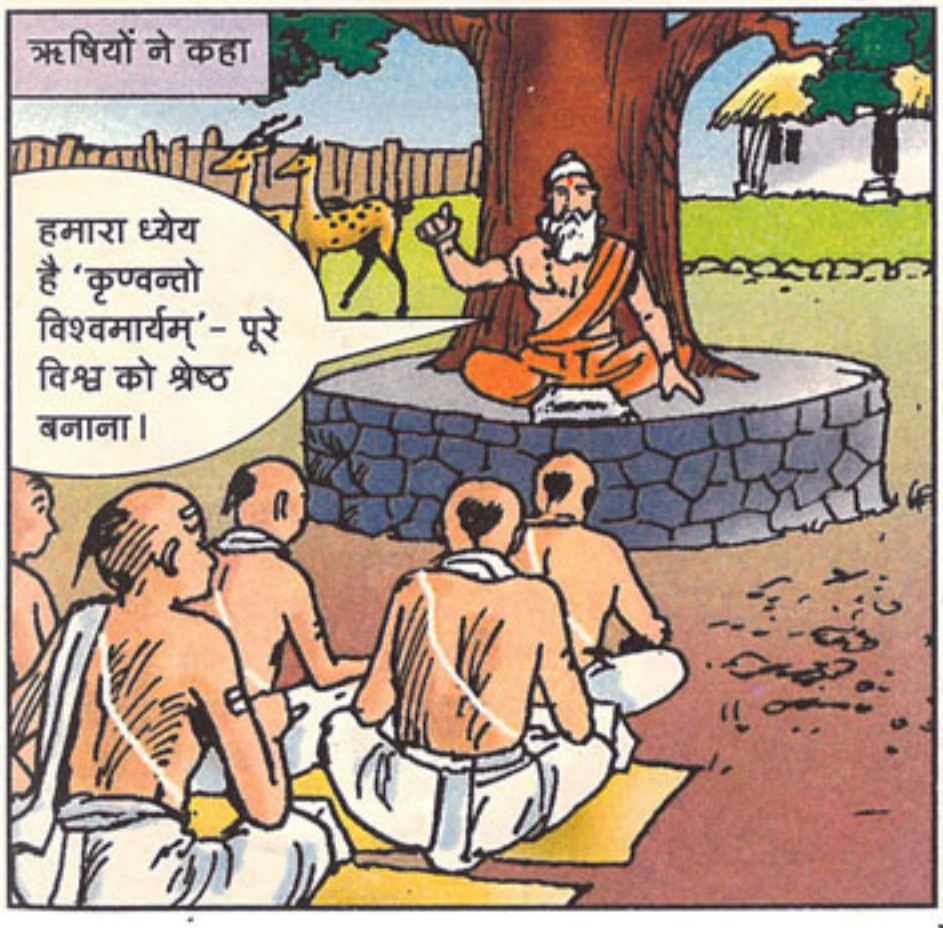

स्वामी रामसुखदासजी लिखते हैं – भैंस के दूध से बुद्धि स्थूल (मोटी) होती है।...बकरी का दूध गाय के दूध की तरह बुद्धिवर्धक और सात्विक बात समझने के लिए बल देनेवाला नहीं होता।

सात्विक व्यक्ति ही छिपे वेष में रहनेवाले संतों को पहचान पाते हैं।

४. चाय में डूबी गाय

राहुल उन पढ़े-लिखों में से था, जिन्हें देश के बारे में कम और विदेश के बारे में अधिक जानकारी है। विदेश से लौटकर अपने गौभक्त मित्रों से मिला।
राहुल! तुम बिना दूध की चाय क्यों पी रहे हो?
यूरोप में काली चाय ही पीते हैं। वहाँ के वैज्ञानिक कहते हैं कि गाय का दूध सफेद जहर है। इससे मधुमेह, आँतों के कैंसर जैसे रोग होते हैं।
सुनो! कल टी.वी.पर श्रीकृष्ण-लीला में दिखाया

''कंस राक्षसी पूतना से कहता है ''
पूतना! राक्षसी का दूध मनुष्य के लिए जहर है। तुम औरत बनकर जाओ और गोकुल के बच्चों को अपना दूध पिलाकर सभी बच्चों को मार डालो, उनमें मेरा काल भी खत्म हो जायेगा। हा s हा s हा s ...

''मुझे लगता है, गायों की तरह दिखनेवाली यूरोप की होलेस्टाइन, जर्सी भी कहीं पूतना जैसी राक्षसियाँ तो नहीं? जिनके दूध को जहर कहा है।''
ककूद नहीं
पीछे से नुकीली
पतली गलकंबल

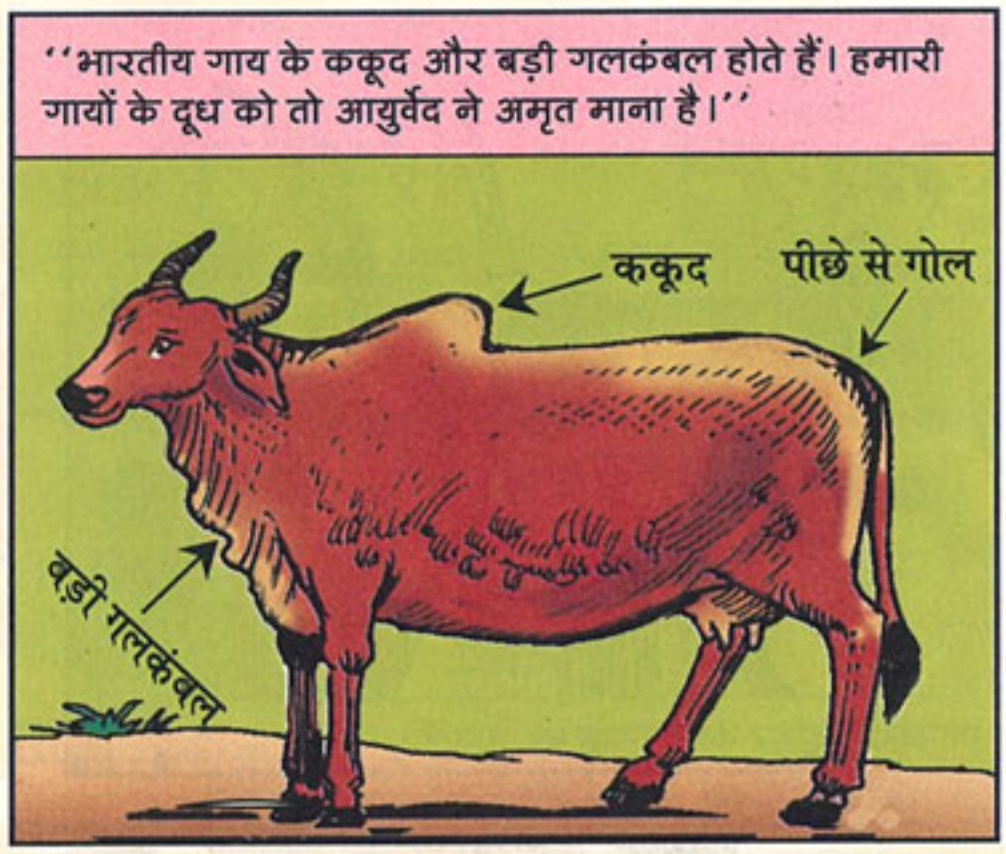
''भारतीय गाय के ककूद और बड़ी गलकंबल होते हैं। हमारी गायों के दूध को तो आयुर्वेद ने अमृत माना है।''
ककूद
पीछे से गोल
बड़ी गलकंबल

तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि पश्चिम में गोपालन दूध-घी के लिए नहीं, मांस के लिए शुरू हुआ था। आज भी यही उद्देश्य है। डेयरी नाम तो अपनी क्रूरता को छिपाने के लिए दिया गया।
ऐसा नहीं है कि वहाँ विज्ञान के प्रति बहुत जागृति है। जर्सी का दूध बेस्वाद और बदबूदार होता है। इसलिए काली चाय-कॉफी पीते हैं।
ये जानवर प्राकृतिक नहीं हैं, गुणसूत्रों को विकृत कर वैज्ञानिकों ने बनाया है। ये 'जेनेटिकली एंजीनियर्ड काउ' हैं।.... जो खुद ही बार-बार बीमार पड़े, उनके दूध में ताकत कैस हो सकती है?

तुम्हारी बात में दम है। यूरोप में इतना दूध होता है, फिर भी दूध की न तो मिठाइयाँ बनती हैं, न अधिक उपयोग ही होता है। ये दूध का पाउडर बना सस्ती दर पर गरीब देशों में भेज देते हैं।

और ये धर्मात्मा बन, भुखमरी की समस्या मिटाने की आड़ में रोग फैलाते हैं।

फिर इनकी दवा कंपनियाँ दवाइयाँ बेचकर सौगुना मुनाफा कमा लेती है।

DAIRY MILK

MEDICINE

पैकिंग सुंदर, चीजें घटिया, दावे ऊँचे

IRON + COOO

FREE VITAMIN

Health FOOD

पूतना का दूध पीने लायक बनाने के लिए कुछ कंपनियाँ घटिया किंतु स्वादिष्ट और सुगंधित चीजें बनाकर बेचती हैं। जिन्हें बच्चों को दूध पिलाने की इच्छा से माता-पिता खरीद लाते हैं।

ऐसे रुपये बर्बाद करने से तो गाय का दूध पाँच रुपये अधिक देकर भी खरीदा जाय तो बहुत सस्ता पड़ता है।

हाँ, भेड़-बकरी-भैंस पालक केवल दूध बेचकर अपना गुजारा नहीं कर सकते। ये इन्हें और इनके नरों को कसाइयों को बेच देते हैं। लेकिन गोपालक मांस की कमाई नहीं करते।

एक बात बताओ, यूरोप-अमेरिका ठंडे प्रदेश हैं, इसलिए वहाँ के लोग चाय-कॉफी पीते हैं, लेकिन तुम क्यों यह गंदी चीज पी रहे हो?

गंदी चीज कैसे? चाय तो गरीबों का सहारा है, उसे किसी का स्वागत करना हो, तो चाय ही सबसे सस्ती है। वह खुद भी इतना महंगा दूध नहीं पी सकता।

पहले जब चाय नहीं थी, तो क्या गरीब किसी का स्वागत नहीं करते थे? कई जगह गरीब-अमीर सभी अतिथि का स्वागत देशी गुड़ और पानी से करते थे।

तब तो आज के बाजार भाव से पाँच रुपये अधिक लेना उनका हक और देना हमारा धर्म है। इसे जानकर भी ऐसा न कर धर्मात्मा बननेवाले पाखंडी और गौ-हत्यारे हैं।

ऐसे ही शेष भारत में भी कोई ना कोई प्रथा होगी ही। आज चाय के चक्कर में पहले केवल पानी पकड़ा दिया जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है।

जो चाय-बीड़ी-दवाई के नाम पर हर महीने सैकड़ों रुपये फूँक सकते हैं, वे गरीब नहीं दरिद्र हैं, दरिद्र ही रहेंगे। उनके लिए गोपालकों के पेट पर लात मारने का तर्क ठीक नहीं।

एक बात और - अंग्रेज लाये चाय क्योंकि उन्हें खानी थी गाय। चाय भैंस के दूध से अच्छी बनती है। इससे गाय की मांग घटी और गोपालक गाय छोड़ भैंस पालने लगे।

ओह! मतलब चाय की गुलामी, गौ-हत्यारे अंग्रेजों की गुलामी है। तब तो चाय पीकर 'भारत माता की जय' बोलना बेमानी है। आज से चाय बंद, लेकिन फिर क्या पीयें?

तुलसी से बनाया उकाला *। इससे चाय का नशा छोड़ने में आसानी होगी और दिन भर स्फूर्ति भी बनी रहेगी।

लेकिन एक प्रश्न मेरे मन में है। हमारी गायें दूध बहुत कम देती हैं, इसका क्या हल है?

यह भी एक झूठा प्रचार है। अलग-अलग प्रदेशों में भारतीय गायों की ३० से अधिक नस्लें हैं, जिनमें...

...कुछ नस्लों के बैल अच्छे होते हैं, तो कुछ दूध अच्छा देती हैं, जैसे गिर गाय। पूरे विश्व में सबसे अधिक दूध देने का कीर्तिमान इसी के नाम पर है।

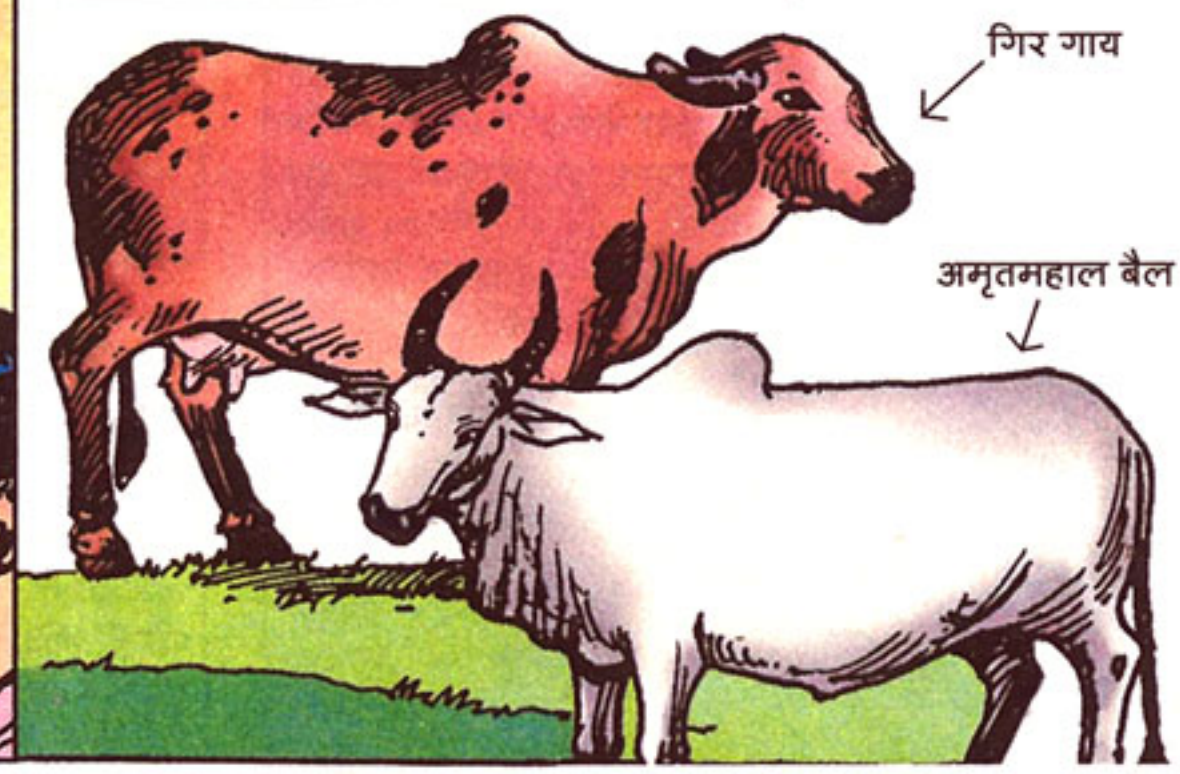

मित्रो! आज बहुत सी गलतफहमियाँ दूर हो गईं। आज की 'उकाला पार्टी' में तो आनंद आ गया। अब से मैं 'चाय पार्टी' नहीं, 'उकाला पार्टी' पर सबको बुलाया करूँगा।

मनुष्य को प्रतिदिन गाय के दूध-दही-घी का ही उपयोग करना चाहिए, लेकिन विशेष परिस्थितियों में बकरी का दूध और भैंस का दही काम में लिया जा सकता है, लेकिन जर्सी आदि नस्लों की तो कोई भी चीज काम में लेने योग्य नहीं।

५. बैल जब दौड़े तो हार गये घोड़े

राजस्थान का एक जिला है - नागौर। एक बार जोधपुर के महाराजा वहाँ शिकार खेलते हुए अपने सिपाहियों से बिछुड़कर संकट में फँस गये।

मित्र! मैं अकेला हूँ, इसका शत्रु को पता चल गया है। मुझे मारने के लिए उसने सैनिकों का दल भेजा है।

मेरा घोड़ा थक चुका है, तुम एक अच्छा घोड़ा दे दो, ताकि मैं रात ही रात में जोधपुर पहुँच जाऊँ।

महाराज! आप घोड़े पर बैठकर जायेंगे, तो शत्रु आपको पहचान लेंगे। अतः आप बैलगाड़ी से जाइये।

मित्र! जोधपुर यहाँ से २०० कि.मी. से भी अधिक दूर है, बैल धीरे दौड़ते हैं और जल्दी ही थक भी जायेंगे।

महाराज! मेरे पास नागौरी बैल हैं, इन्हें तो दौड़ में घोड़े भी नहीं जीत सकते।

महाराजा बैलगाड़ी पर निकल पड़े और ....

एक ही रात में शत्रु के घेरे से सुरक्षित निकल जोधपुर पहुँच गये।

नागौरी बैल

६. डॉ. गाय

दूध
कबड्डी-
कबड्डी ....
भैंस के दूध से बल तथा बकरी के दूध से स्फूर्ति और लचीलापन बढ़ते हैं। खेल में दम और एकाग्रता भी चाहिए - गाय के दूध से ये पाँचों गुण बढ़ते हैं।

महाराणा प्रताप दल फाइनल में पहुँचा
शिक्षकजी! फाइनल में तो पहुँच गये, लेकिन थकान के कारण कल खेलने की ताकत ही नहीं है।
मेरे पैर की हड्डी में भी चोट लगी है।
मेरी मांस पेशियों में खिंचाव आ गया है।
बच्चों! गाय का गर्मागर्म दूध-घी-हल्दी पी लो, सब ठीक हो जायेगा।

दूसरे दिन
तैयार हो?
बिल्कुल।

महाराणा प्रताप की जय।
कबड्डी-
कबड्डी ....

जीतना है तो रोज पी
देशी गाय का दूध-घी
खेलनेवालों के लिए तो दूध-घी जरूरी है ही। प्राणायाम करनेवाले यदि दूध-घी नहीं पीयेंगे तो प्राणायाम की गर्मी से उनका शरीर जलने लगेगा।

दही
एक कहावत है - खाओ दही तो सब काम सही
बधाई हो। आप दादी बननेवाली हैं।

हमारे पड़ोस में एक बच्चा विकलांग पैदा हुआ है और एक मंद बुद्धि।

चिंता न करें। आप रोज चांदी के प्याले में गाय का दूध जमाकर सुबह उसका ताजा दही अपनी बहू को खिलायें - इससे होनेवाली संतान न विकलांग होगी, न ही मंद बुद्धि।

लस्सी

लस्सी के गुण अस्सी

मित्र! तुम्हारी हड्डी कैसे टूटी?

पैर फिसलने से।

ऐसे तो बुढापे में हड्डी टूटती है। इसका मतलब तुम्हारी हड्डियाँ कमजोर हो गई हैं।

तुम कहते थे न कि 'पंजाब दी लस्सी ओल्ड ड्रिंक, पाप्पे पीओ कोल्ड ड्रिंक'। कोल्ड ड्रिंक में फॉस्फोरिक एसिड होता है, जिससे हड्डियाँ कमजोर होती हैं।

तुम लस्सी पीते तो हड्डी नहीं टूटती क्योकि लस्सी से हड्डियाँ मजबूत होती है, यकृत-गुर्दे को शक्ति मिलती है।

मतलब पंजाब दी लस्सी ओल्ड ड्रिंक, ओल्ड ड्रिंक इज़ गोल्ड ड्रिंक

मक्खन

कृष्ण बालक से स्वप्न में

तुम रोज माखन-मिश्री खाया करो। इससे दिमाग तेज और शरीर शक्तिशाली होगा।

हाँ, भगवान! मुझे बटर बहुत अच्छा लगता है।

बटर मक्खन नहीं है। कच्चे दूध से निकाली गई चिकनाई (क्रीम) को बटर कहते हैं, यह दिमाग को ठंडक नहीं देता और मोटापा भी बढ़ाता है।

मक्खन दही को मथकर निकाला जाता है। यह बच्चों के दिमाग-शरीर और ब्रह्म तेज की रक्षा के लिए सबसे अच्छा टॉनिक है।

छाछ

एक दिन कक्षा में

वीरू! तुम्हें नींद आ रही है?

जी नहीं! ध्यान से सुन रहा हूँ।

कुछ देर बाद

वीरू! तुम फिर सो रहे हो?

जी नहीं। सुन रहा हूँ।

एक मिनट बाद

वीरू! जिंदा हो?

हा..हा..हा...

जी नहीं! बिल्कुल नहीं।

माँ! आप कहती हो, तेज गर्मी पड़ रही है। छाछ पीकर स्कूल जा, नहीं तो लू लग जायेगी, लेकिन इससे स्कूल में नींद आती है। कल मेरी बड़ी हँसी उड़ गई।

बेटा! आज से हमारे घर में भैंस का नहीं गाय का दूध आने लगा है। भैंस की छाछ से आलस आता है, गाय की ताजी छाछ से नहीं। इससे आँतों में ठंडक रहने से टायफाइड नहीं होता....

यकृत को ताकत मिलने से पीलिया, गुर्दे में पथरी, मोतियाबिंद नहीं होता, भोजन भी अच्छी तरह पच जाता है।

माँ! अब तो मैं रोज छाछ पीऊँगा।

घी

आनंदजी के भुलक्कड़पन से सब परेशान थे।

दीदी! मेरी ऐनक नहीं मिल रही, आपने कहीं देखी?

भाई! घी खाया करो, तो यह भुलक्कड़पन कम होगा।

डॉक्टर घी खाने के लिए मना करते हैं।

हमारे डॉक्टर एलोपैथी पढ़ते हैं। जो आहार-विज्ञान में एकदम पिछड़े यूरोप की देन है। जहाँ लोग जानते ही नहीं कि घी क्या है? इसकी जगह हानिकारक चर्बी काम लेते हैं। इसलिए वे चिकनाई मना करते हैं।

''दिन में दही खाना ठीक है, लेकिन रात को खाने से दिमाग कमजोर होता है। श्रावण महीने में दूध नुकसान करता है। भाद्रपद में दही नुकसान करता है। आश्विन मास में खीर खाने से मलेरिया नहीं होता। किस समय, किस ऋतु में क्या खाना चाहिए ऐसी बहुत सी बातें एलोपैथी से समझ ही नहीं सकते।''
दूसरी बात - बाजार में असली घी नहीं मिलता और मिलता भी है तो बटर से बना बटर ऑइल, मक्खन से बना घी नहीं। ये दोनों अलग है, यह ज्ञान भी कुछ ही वैद्यों को है।
आयुर्वेद में घी को आयु कहा गया है। मस्तिष्क १८-२०% चिकनाई से बना है, इसकी मात्रा कम हो जाने पर वह कमजोर हो जाता है। इसकी पूर्ति के लिए घी से सस्ती दूसरी कोई चीज नहीं।
दूसरे दिन
दीदी! कल तुम्हारे कहने पर दाल का हलवा खा लिया। उसमें खूब घी था। अब पेट में दर्द हो रहा है।
घी को दोष मत दो। तुमने हलवे के ऊपर क्या खाया था?
अऽऽ, हाँ याद आया, आइस्क्रीम।
घी की चीज के ऊपर ठंडी चीजें तो क्या सादा पानी भी विष के समान है। इनके साथ या ऊपर हमेशा गर्म दूध, गर्म कढ़ी या गर्म पानी पीना चाहिए, इससे घी अमृत की तरह लाभ पहुँचाता है।
घी-खिचड़ी गर्म कढ़ी
जलेबी-गर्म दूध
मिठाई-गर्म पानी
'' विश्वप्रसिद्ध गौ विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. गौरीशंकरजी माहेश्वरी कहते थे 'गर्म दूध में दो चम्मच गाय का घी डालकर फेंटकर पीने से पाचन शक्ति अच्छी रहती है, पेट साफ रहता है । एसिडीटी, गैस, जोड़ों के दर्द आदि से छुटकारा मिलता है। लेकिन आजकल तो दूध में जो चिकनाई होती है, उसे भी निकाल लिया जाता है, ऐसा दूध वात रोगों को बढ़ाता है।''
आयुर्वेद के अनुसार वात-पित्त-कफ तीन दोष होते हैं, ७०% रोग वात के बढ़ने से होते हैं ।

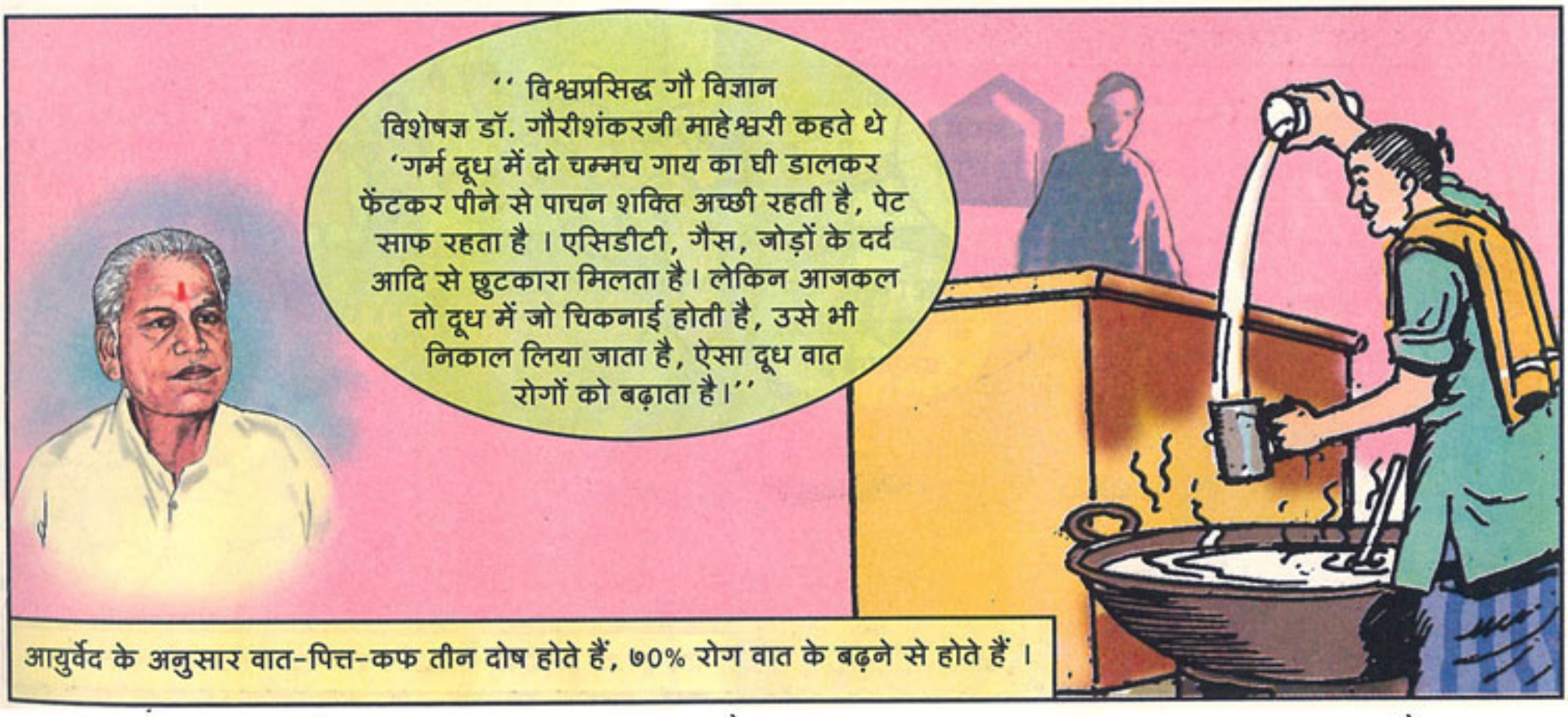

भाई! मैं घुटने के दर्द से बहुत दुखी थी। दादी माँ का नुस्खा अपनाया 'उबालो दूध-हल्दी, घी फेंटो जल्दी। खड़े-खड़े ही पी, घुटना न दुखे कभी। रख एक सावधानी, सदा बैठ पी पानी।' अब तो मैं नाच भी सकती हूँ।

''एक दिन हमारी पड़ोसन आकर कहने लगी ''

दीदी! हमारे घर के एक-एक कर सब, डॉक्टर के पास जा चुके हैं। आपके घर कोई बीमार नहीं पड़ा, इसका क्या राज है?

रोज ३०-४० ग्राम गाय का घी खाने से दवाइयाँ नहीं खानी पड़ती। घी से रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। जो घी में कंजूसी करते हैं, वे उससे कई गुणा अधिक बीमारियों में लगा देते हैं।

लेकिन दीदी,घी खाने से तो मोटापा बढ़ता है।

पतलेपन और मोटापे का मुख्य कारण भोजन का अच्छी तरह न पचना है। गाय का घी भोजन को पचाता है। इससे पतले का वजन बढ़ता है, तो मोटे का वजन कम होकर शरीर संतुलित रहता है।

''एक दिन तुम्हारे जीजाजी कुश्ती देखने गये।''

यह दिखता पतला है, पर कुश्ती में अच्छे-अच्छों को पछाड़ देता है। कौन सी चक्की का आटा खाता है ?

आटा नहीं, यह तो गाय के घी का चमत्कार है।

गाय का घी खाने से दम और बल बढ़ता है, मोटापा नहीं।

''डॉ. गौरीशंकरजी माहेश्वरी तो चार बूँद गाय के घी से १० से भी अधिक रोगों का उपचार बताते थे।''

मेरे सिर में दर्द है

मेरी आँखों में

मेरे कान में

मुझे तनाव बहुत रहता है

मुझे सायनस के कारण साँस लेने में तकलीफ है

''घर में हमेशा गाय का घी रखा करो। दो-दो बूँद गाय का गुनगुना घी नाक में डालने से इन सब में चमत्कारिक लाभ होता है। ध्यान रहे यह घी दही मथकर बनाया हुहोना चाहिए। ''

मुझे एलर्जी है

मेरे बाल गिरते हैं

पढ़ने से थक जाता हूँ

''योगी कहते हैं ''

गाय का घी नाक में डालने से आज्ञाचक्र को शक्ति मिलती है। इससे योग में जल्दी प्रगति होती है।

''रात को सोते समय प्रतिदिन इसका प्रयोग करो। यह आँख, कान, दिमाग के लिए बहुत अच्छा टॉनिक है। इससे स्मरण शक्ति तेज होती है।''

सावधानी : नाक में घी डालते समय इसका तापमान शरीर के तापमान से कुछ अधिक हो। इसे साँस के साथ खींचे नहीं, बल्कि आज्ञाचक्र के पास ही रहने दें। एक घंटे तक पानी ना पीयें।

गोबर
मुंबई शहर के एक फ्लैट में
तुम लोग अपने घरों को फ्लैट क्यों कहते हो ?

जिसे न शुद्ध हवा मिलती है, न पानी, न भोजन। जिसके पास न जमीन अपनी हो, न छत। ऐसे फ्लैट (चारों खाने चित) हुए लोग जहाँ रहते हैं, उसे फ्लैट नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे ?
हा..हा..हा...
वाह! क्या सटीक टिप्पणी की है।

लोग इतने कष्ट में हैं, तो गाँव छोड़ यहाँ क्यों रहते हैं ?
लक्ष्मी के लिए।
मगर शहरों में जो लक्ष्मी है, वह तो उल्लू पर बैठी हुई है और कभी भी उड़ सकती है।
मित्र! मजाक में तुमने गंभीर बात कह दी। हमारे देश को लूटने के लिए २००० वर्षों तक शहरों पर आक्रमण होते रहे, लेकिन लक्ष्मी के स्रोत गाँव थे। इसलिए १०-१५ वर्षों में ही शहर फिर समृद्ध हो जाते थे।

अब तो प्रगति के नाम पर गाँवों को शहरों पर आश्रित बना दिया है। हालत यह है कि केवल १० बड़े शहरों को नष्ट कर दिया जाय, तो फिर कभी भी यह देश खड़ा नहीं हो पायेगा।
तो उपाय क्या है ?

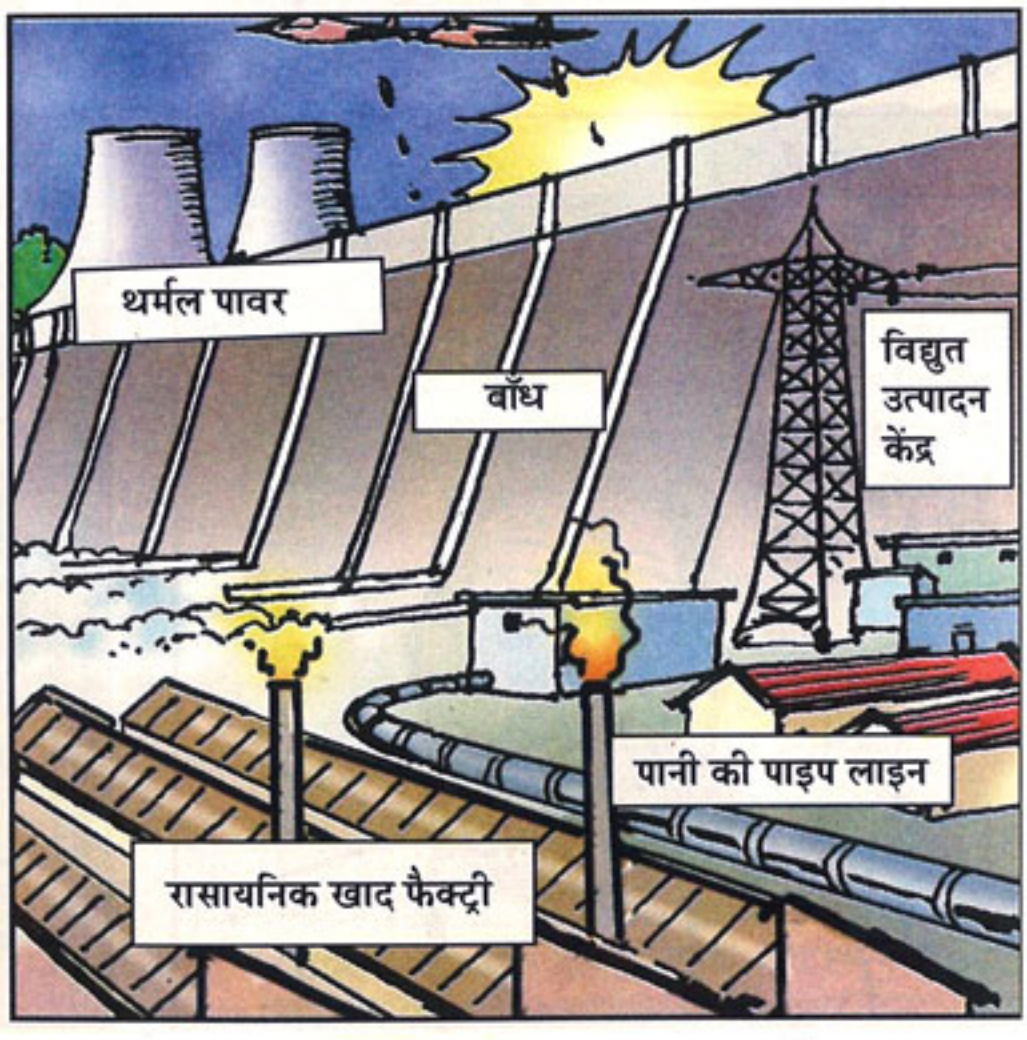
थर्मल पावर
बाँध
विद्युत उत्पादन केंद्र
पानी की पाइप लाइन
रासायनिक खाद फैक्ट्री

गाँव की लक्ष्मी को गाँव में ही रोकना होगा और शहरों की लक्ष्मी को गाँवों में खींचना होगा।

शास्त्र कहते हैं कि लक्ष्मी का वास गोबर में है। इसलिए गोबर से श्रीगणेश करना होगा।

बातें बड़ी-बड़ी और योजना गोबर गणेश। हा..हा..हा...

ये हँसने की बात नहीं है। गोबर वास्तव में गो वर अर्थात् गाय का वरदान है।

वो कैसे ?

गाय के १ किलो गोबर से नॅडेप पद्धति से ३० किलो खाद तैयार होती है। समझदार लोगों में इससे उगे अन्न-फल-सब्जी की अच्छी मांग होने से ये अच्छे भाव बिकते है। विदेश में तो इसकी भारी मांग है।

गाय के गोबर से रोज काम आनेवाली बहुत सी चीजें बनने लगी हैं। लोगों को इनका बड़ा भारी लाभ मिल रहा है। लोगों ने अपने अनुभव बताये। पहला अनुभव

जब से हम गाय के गोबर का धूप कर रहे हैं, लगता है तब से लक्ष्मीजी की बड़ी कृपा हो रही है।

दूसरा अनुभव - पानी के कारण रोग फैलने पर डॉक्टर के आगे भयंकर भीड़ लग जाती है...

दवाखाना

लेकिन एक चुटकी हल्दी और दो चुटकी धूप की भस्म (राख) मटकी में डाल देने से कोई रोग नहीं होता। पानी उबालने के झंझट और खर्च से भी मुक्ति मिल जाती है।

इस भस्म ने तो मेरी कमाई को ही भस्म कर दिया।

तीसरा अनुभव - इसकी भस्म घाव पर लगाने से वह बहुत ही जल्दी ठीक हो जाता है।

चौथा अनुभव

क्या बात है, आपके घर में पंखा बंद है, तब भी गर्मी नहीं है ?

भैया! हमारा घर गोबर से लीपा हुआ है। ऐसे घर गर्मी में ठंडे और सर्दी में गर्म रहते हैं।

गाय के गोबर से लीपे हुए मकान में रेडियो सक्रिय किरणों का दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता।

पाँचवाँ अनुभव

तुम दसवीं में प्रथम आने का श्रेय किसको देते हो ?

माता -पिता, शिक्षक और अंगराग को।

अंगराग ? ?

परीक्षा के बाद अंगराग का लेप ललाट पर लगाकर आधे घंटे लेटने से मेरी पूरी थकान मिट जाती थी और मैं अगले दिन की तैयारी के लिए तरोताजा हो जाता।

गोबर, मुलतानी मिट्टी, हल्दी आदि से अंगराग बनता है।

छठा अनुभव

डॉक्टर साहब! यह देखिये मेरी त्वचा कैसी हो गई है।

यह चर्म रोग है। साबुन लगाना बिल्कुल बंद कर दो।

आप मजाक कर रहे हैं क्या ? साबुन तो त्वचा को साफ करता है।

चर्बी और रसायन से बने साबुन त्वचा को नुकसान पहुँचाते हैं। सफाई के लिए नहाते समय हाथ से रगड़ना ही काफी है। सप्ताह में एक दो बार घरेलू उबटन लगाकर नहा लिया करो।

मैं पिछले २८ वर्षों से साबुन नहीं लगा रहा हूँ। क्या तुम्हें मैं मैला दिख रहा हूँ या मेरे शरीर से दुर्गंध आ रही है ?

बिल्कुल नहीं।

अंगराग चर्म रोगों का नाश करता है। अंगराग उबटन और बट्टी त्वचा को पोषण देते हैं। इससे नहाने से शरीर में गजब की ताजगी आती है और त्वचा एकदम कोमल हो जाती है।

अंगराग

सातवाँ अनुभव

तुम्हारे मुँहासे कैसे गायब हो गये?

रोज चेहरे पर २०-२५ मिनिट अंगराग का लेप लगाकर रखने और दूध-घी पीकर आँतों की गर्मी कम करने से।

अंगराग से रूसी, बाल झड़ना, बुखार आदि में भी आराम मिलता है।

आठवाँ अनुभव

पिताजी! मुझे गोबर के कोयले से मंजन करने में शर्म आती है।

शर्म क्यों? कोयला कीटाणुनाशक-दुर्गंधनाशक है। इसलिए फिल्टरों में इसका उपयोग करते हैं। हजारों वर्षों से हम घरों में बने गोबर के नरम कोयले से मंजन कर रहे हैं।

गोमय मंजन से बुढ़ापे में भी हमारे दाँत गन्ने खाने लायक रहते थे, जबकि टूथपेस्ट-ब्रश करने वाले यूरोप में हर तीसरा व्यक्ति दाँत का रोगी है।

गोमूत्र

गाय के दूध-दही-घी से भी अधिक मूल्यवान है गोबर और गोमूत्र। गोमूत्र औषधि नहीं, महा औषधि है।

आओ मीरा! विवाह के बाद पहली बार आई हो। कहो कैसी हो?

नमस्ते वैद्यजी। मैं तो अच्छी हूँ, लेकिन मेरे ससुराल में हर समय कोई ना कोई बीमार रहता है। मैंने सुना है कि गोमूत्र से बहुत से रोग दूर हो जाते हैं?

बहुत ही अच्छे समय पर आई हो। मैं तुम्हारी बात का उत्तर बाद में दूँगा। पहले इनकी कहानी सुनो।

मुझे कैंसर हो गया था और कैंसर के कारण मैंने जीवन की आशा ही छोड़ दी थी।

''तब एक संत आये''

बेटा! चिन्ता मत कर। हर दिन गोमूत्र हाथ में ले यह प्रार्थना कर पी लिया कर- हे गोमूत्र! आपमें गंगा का वास है। गाय के शरीर में सभी देवता हैं, आप उनके तीर्थों का जल हो। हे प्राणवान गोमूत्र! मैं गौ माता की शरण में हूँ। मेरे प्राणों की रक्षा करो।

''प्रार्थना कर पिये गये गोमूत्र ने मेरा कैंसर खत्म कर दिया।''

चमत्कार! सुना है कि इसके कैंसर नाशक गुणों के कारण इसे अमेरिका में पेटेंट भी मिला है।

आज जिस विधि से आयुर्वेदिक औषधियाँ बनती हैं, उससे उनकी प्राण-शक्ति घट जाती हैं। जिससे ठीक होने में समय लगता है। **जबकि गोमूत्र प्राणवान है। प्रार्थना से प्राण सक्रिय हो जाता है। उससे रोग शीघ्र ही ठीक हो जाता है।** प्राण और प्रार्थना विज्ञान के प्रति हमारे अज्ञान के कारण ही हमें यह चमत्कार लगता है।

''योगी इस प्राण-शक्ति को योग-प्रणायाम से जागृत कर ही तो बिना औषधि के करोड़ों लोगों को लाभ पहुँचा रहे हैं।''

गोमूत्र की इस प्राण शक्ति से क्या सभी रोग ठीक हो सकते हैं?

हाँ। मृत्यु ही किसी रोग का चोला पहन ले, तो बात अलग है। अन्यथा कब्ज, गैस, दमा, मोटापा, रक्तचाप, जोड़ों के दर्द, मधुमेह, संक्रामक रोग सभी ठीक हो सकते हैं।

क्या स्वस्थ आदमी को भी गोमूत्र पीना चाहिए?

अवश्य। यह वात-कफ दोष नाशक है। छोटी आँतों में जमा पित्त दोष को भी शरीर से बाहर निकालता है। यह कीटाणुनाशक, फफूंदनाशक, दर्दनाशक औषधि ही नहीं प्राणवान टॉनिक भी है।

''रासायनिक खाद-कीटनाशकों का जहर भोजन के माध्यम से हमारे शरीर में पहुँच जाता है, इनमें से कुछ गोमूत्र और कुछ घी से नष्ट होकर शरीर से निकल जाते हैं।''

PESTICIDE
POISON

गोमूत्र में ऐसी विषनाशक शक्ति है कि यह विष को भी अमृत बना देता है। आयुर्वेद में पारा, गंधक, भिलावा, संखिया आदि विषैली चीजों को इससे साफ कर औषधि बना लिया जाता है।

क्या किसी भी गाय का गोमूत्र ले सकते हैं? इसे लेने की कोई विशेष विधि है क्या?

८ बार सूती कपड़े से ताजे गोमूत्र को छानकर गर्मी में दो चम्मच और सर्दी में आधा कप पीने से कभी कोई रोग नहीं होता। कचरा खाने को विवश गाय का गोमूत्र नहीं लेना।

गोमूत्र के संबंध में अधिक जानकारी हेतु
सुषमा सेवा प्रकाशन की 'गो-गव्य चिकित्सा' पुस्तक पढें।

अच्छा और ताजा गोमूत्र न मिलने पर उससे बने अर्क-गोली या आसव आदि भी ले सकते हैं। किसी औषधि को गौमूत्र अर्क के साथ लेने से औषधि की शक्ति कई गुणा बढ़ जाती है।

जब गाय में इतने गुण हैं तो जिनके घरों में गायें है, वे डॉक्टर के पास क्यों जाते हैं?

''एक बार संतासिंह भागा जा रहा था।''

ओए संता! ऊपर देखते हुए कहाँ दौड़े जा रहे हो?

बंतासिंह ने कौए को मेरी नाक ले जाते देखा, इसलिए अपनी नाक छीनने जा रहा हूँ।

''गाय के रूप में घर में ही डॉक्टर है, लेकिन दवा कंपनियों के बहकावे में आने से गोपालकों की भी संतासिंह जैसी हालत हो गई है।''

अच्छा एक बात बताओ, टी.वी.को इडियट बॉक्स क्यों कहा जाता है ?

टी.वी. देखने से सोचने की क्षमता कम हो जाती है और व्यक्ति जो देखता है उसी की नकल करने लगता है।

एकदम सही। वह चाय का नशा, विषैले कोल्ड ड्रिंक पीना, बटर और बाजारू टॉनिक खाना सीख जाता है। दादा-दादी से परंपराओं को समझने की जगह सीरियलों से गंदी बातें सीखता है।

गाय पालनेवाले अपनी चीजों का टी.वी. पर विज्ञापन क्यों नहीं देते ?

''१ रु. की चीज १० रु. में बेचनेवाले टी.वी. पर अपना विज्ञापन दे सकते हैं, गोपालक नहीं। ऐसा हुआ तो ४० रु. लागत का दूध ४०० रू., १००० रु. का घी १०,००० रु. किलो बिकेगा। ''

लेकिन आज जो ४० रु. लीटर का दूध २० रु. में, १००० रु. किलो का घी २००-२५० रु. में बेचना पड़ रहा है और जिसके कारण गायें छोड़ दी जाती है, इसका उपाय क्या है ?

आज बहुत सी जगह दूध ३० रु.लीटर और घी ५००-६०० रु. किलो बिकने लगा है। इससे जिन्होंने गायें छोड़ दी थीं, वे फिर से गाय रखने लगे हैं। भाव बढ़ने से और अधिक लोग गाय पालेंगे।

इससे तो केवल अधिक दूध देनेवाली गायों की ही मांग बढ़ रही है। जो गायें कम दूध देती है, उन्हें कौन पालेगा ?

गोबर-गोमूत्र के उत्पादों के घर-घर उत्पादन और आस-पास बिकने से ही गाय बच सकती है।

इनको बनाने के प्रशिक्षण की व अन्य जानकारी 'सुषमा सेवा प्रकाशन' से फोन, ई-मेल या जवाबी पत्र साथ भेजने से मिल सकती है।

नमस्कार वैद्यजी।

आइये! आइये! बहुत सही समय पर आये, जरा मीरा को बताइये कि गौ माता के सत्संग से आपको क्या लाभ हुआ।

मुझे ७ वर्ष से उच्च रक्तचाप था। डॉक्टरों ने कहा कि जीवन भर दवाई लेनी पड़ेगी। गाय पर प्रेम से हाथ फेरने से दो महीनों में मैं बिल्कुल ठीक हो गया। मेरी गाय भी अधिक दूध देने लगी।

वाह!

मुझे क्षय रोग (टी.बी.) हो गया था। गायों के पास सोने से यह भयंकर रोग ठीक हो गया।

आश्चर्य!
जिसने गाय से नाता जोड़ा।
रोग ने उससे नाता तोड़ा।।

वाह! क्या सुंदर बात कही। यह उक्ति तो दीवार-दीवार पर लिख देनी चाहिए। क्या तुम ऐसी कुछ और उक्तियाँ बना सकती हो?

गो-सुषमा को समझकर,
जो फेरे गौ पे हाथ।
बिन डॉक्टर की दवा के
रोग छोड़ दे साथ।।

गो-सुषमा को समझकर
जो घर में रखे गाय।
गोबर-गोमूत्र-घी से,
वो खूब करेगा आय।
खूब करेगा आय,
लक्ष्मी माता आयेगी
सुख समृद्धि मान-
प्रतिष्ठा संग लायेगी।।

जो छोड़ टूथपेस्ट-ब्रश,
गोमय मंजन अपनाये।
दाँत रहे सदा युवा
बुढ़ापा पास न आये।।

जिसके घर तुलसी और
गाय। उसके घर कभी
रोग न आया

कुछ दिनों बाद गाँव-गाँव, गली-गली

जो अंगराग से नहाये,
उसे चर्मरोग न सताये

गौ-उत्पादों का करें प्रयोग।
धन बचे मिट जाये रोग।।

गुरुकुलम्

गोबर धूप से करें पूजा।
आये लक्ष्मी, आये ऊर्जा।।

MH-786

७. गो-सुषमा

राजकुमारी सुषमा का हृदय प्रेम से भरा था। अतः उसे सेवा में विशेष आनंद आता था। एक ऋषि की उसने खूब सेवा की।

मैं तुम्हारी सेवा से तृप्त एवं प्रसन्न हूँ।

किंतु ऋषिवर, मैं तो आपकी सेवा ही ठीक से नहीं कर पाई।

एक दिन राजा के साथ

ऋषिवर! सुषमा को छोड़ मेरी सभी बेटियाँ सुंदर हैं। इसी कारण से इसके विवाह की चिंता रहती है।

राजन्! बच्चे के लिए कुरूप माँ भी किसी सुंदर स्त्री से अधिक सुंदर होती है। माँ की सुषमा को बच्चे की आँख से ही देखा जा सकता है। राजकुमारी में भी ऐसी ही सुषमा है।

'' राजन्! हिन्दू मूर्ति पूजक नहीं हैं। वे पहले मूर्ति में अपने इष्ट की ज्योतीय सुषमा को स्थापित करते हैं - जिसे प्राण प्रतिष्ठा कहते हैं। तब उसकी पूजा करते हैं।''

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं, 'जहाँ-जहाँ तुझे कोई विशेषता दिखाई दे, वहाँ-वहाँ तू मुझे देख।' गाय, तुलसी, गंगा और धरती इन आँखों से देखनेवालों को पशु, पौधा, नदी और मिट्टी दिखे। भारतीयों को उनमें माँ रूप ईश्वरीय सुषमा का दर्शन हुआ।

जय गौ माता।

गंगा मैया की जय।

जय तुलसी मैया।

पादस्पर्शम् क्षमस्व मे *

महापुरुषों की आत्मायें जन्म लेने के लिए भीतरी सुषमा संपन्न माता की खोज में वर्षों प्रतीक्षा करती रहती हैं। ऐसी माता मिलने पर ही वे उसके कोख में प्रवेश करते हैं; किसी सुंदर, विदुषी, व्यवहार-कुशल, गुणी स्त्री की कोख में नहीं।

''उत्तम भूमि (रज) न होने पर उत्तम बीज (वीर्य) नष्ट हो जाता है और जंगली पौधे उग जाते हैं। इसी प्रकार माता श्रेष्ठ न हो तो पिता के श्रेष्ठ होने पर भी श्रेष्ठ संतान संभव नहीं।''

''राजन्! कश्यप ऋषि की सती पत्नी अदिति से देवताओं ने और कामिनी पत्नी दिति से दैत्यों ने जन्म लिया।''

सती अर्थात् पति में स्थित परमेश्वर को समर्पित। कामिनी अर्थात् पति को मात्र अपनी कामनाओं की पूर्ति करनेवाला समझनेवाली।

राजन्! हर व्यक्ति पर तीन ऋण होते हैं। देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण।

''जिस कार्य से देवता तृप्त हों और थोड़ा-सा लेकर बहुत अधिक दें, उसे यज्ञ कहते हैं। हवन से देवता तृप्त होते हैं, इसलिए हवन भी यज्ञ है। अग्निहोत्र हवन में गोबर के कंडे जलाकर उसमें ठीक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय गाय के घी में भीगे अक्षत की मात्र दो आहुतियाँ दी जाती हैं। इसके धुएँ और भस्म से कई असाध्य रोग ठीक होते हैं, फसल बढ़ जाती है और उसमें रोग भी नहीं लगते।''

सूर्योदय के समय

ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।
ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

सूर्यास्त के समय

ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम।
ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

''कृषि से देवता तृप्त होकर एक बीज से हजारों-लाखों बीज बनाकर जगत् के जीवों का पालन करते हैं। इसलिए कृषि उद्योग नहीं, यज्ञ है।''

''गाय में सभी देवताओं का वास है। गाय के तृप्त होने से सभी देवता तृप्त होते हैं। इसी कारण गाय का मल भी गो वर (वरदान) और पवित्र करनेवाला बन गया। गाय की सेवा भी यज्ञ है। ऋषियों के ज्ञान का प्रचार कर ऋषि-ऋण से मुक्त हुआ जाता है।''

आज के युग में ऋषि-ऋण से इस प्रकार भी मुक्त हुआ जा सकता है

भाईसाहब! अच्छा खासा व्यापार छोड़कर यह दूध-घी-गोमूत्र के उत्पाद बेचना क्या शुरू कर दिया?

भैया! यह केवल धंधा नहीं, ऋषि-ऋण से मुक्त होने का प्रयास है।

क्या मतलब?

प्राचीन काल में ऋषि आश्रमों में गायें रखते थे। गोमूत्र-गोबर के सेवन से उनमें पवित्रता आती थी। दूध-घी से उनकी बुद्धि बड़ी विलक्षण होती थी, जिससे वे बड़े-बड़े ग्रंथों की रचना करते थे। आज तो गाय का दूध-घी न खाने के कारण उन्हें समझनेवाले भी कम है। लोगों को इनके सेवन से ऋषियों के ज्ञान को समझने योग्य बनाकर मैं ऋषि-ऋण से मुक्त होने का प्रयास कर रहा हूँ।

श्रेष्ठ संतान को जन्म दे पितृ-ऋण से मुक्त हुआ जाता है। यदि राजकुमारी सुषमा सहर्ष स्वीकार करे, तो पितृ-ऋण से मुक्ति के लिए मैं आप से उसका हाथ मांगता हूँ।

यह सुनते ही भीतर महल में

हाय, मुझे मालूम होता कि ऋषि मेरी बेटी पर मोहित हो जायेंगे, तो उसे ऋषि की सेवा के लिए कभी नहीं भेजती।

हमारी बहन कितने सुख में पली है। ऋषि के पास क्या है? न महल, न नौकर-चाकर।

ऋषि ने जरा भी हमारी प्रतिष्ठा के बारे में नहीं सोचा। प्रजा सोचेगी कि कोई राजकुमार सुषमा से विवाह के लिए तैयार नहीं हुआ, इसलिए राजा ने राजकुमारी को वनवास दे दिया।

राजाओं के संबंधी राजा या राजकुमार होते हैं। एक वनवासी की हिम्मत कैसे हुई मेरी बहन का हाथ मांगने की? यदि वे ऋषि न होते तो मैं अपनी तलवार से ....

क्षमा करें। दूल्हे को वर कहा जाता है, वर अर्थात् श्रेष्ठ। सामान्य मनुष्य धन, पद, बुद्धि, कुल जैसी सांसारिक चीजों से स्वयं को श्रेष्ठ समझते हैं। ये नाम, धन या कामनाओं की पूर्ति जैसे क्षुद्र भावों के वश होकर ही बड़े-बड़े काम करते हैं। इससे कुछ दूर तक ही समाज का हित कर पाते हैं, बाद में तो अहित ही अधिक करते हैं।

ऋषि वास्तव में श्रेष्ठ होते हैं क्योंकि ये बड़े ही नहीं, हर छोटे-छोटे काम भी आध्यात्मिक उद्देश्यों से प्रेरित होकर करते हैं, इसलिए उनके छोटे काम का प्रभाव भी बड़ा और गहरा होता है।

विवाह एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। वर की श्रेष्ठता सांसारिक नहीं, आध्यात्मिक होनी चाहिए। इसका पता उसकी संगति और रुचि से चलता है।

सांसारिक इच्छा से मर्यादाओं को तोड़ना अधर्म है, किंतु अध्यात्म के मार्ग में रोड़ा अटकानेवाली मर्यादा टूटती है, तो इससे जड़ हो रहे समाज में चेतना आती है।

मनमाने व्यवहार के कारण समाज का पतन होने लगा तो राम ने मर्यादाओं का पालन कर समाज के सामने एक आदर्श रखा; किंतु जब लोग मर्यादाओं में बंधकर आध्यात्मिक उद्देश्य को भूलने लगे, तो कृष्ण ने मर्यादाओं को तोड़ा।

एक आध्यात्मिक दृष्टि से संपन्न ऋषि के मन में मुझसे विवाह का विचार आया, इसे मैं अपना परम सौभाग्य मानती हूँ।

बेटी! तुमने अपना सुषमा नाम सार्थक कर दिया।

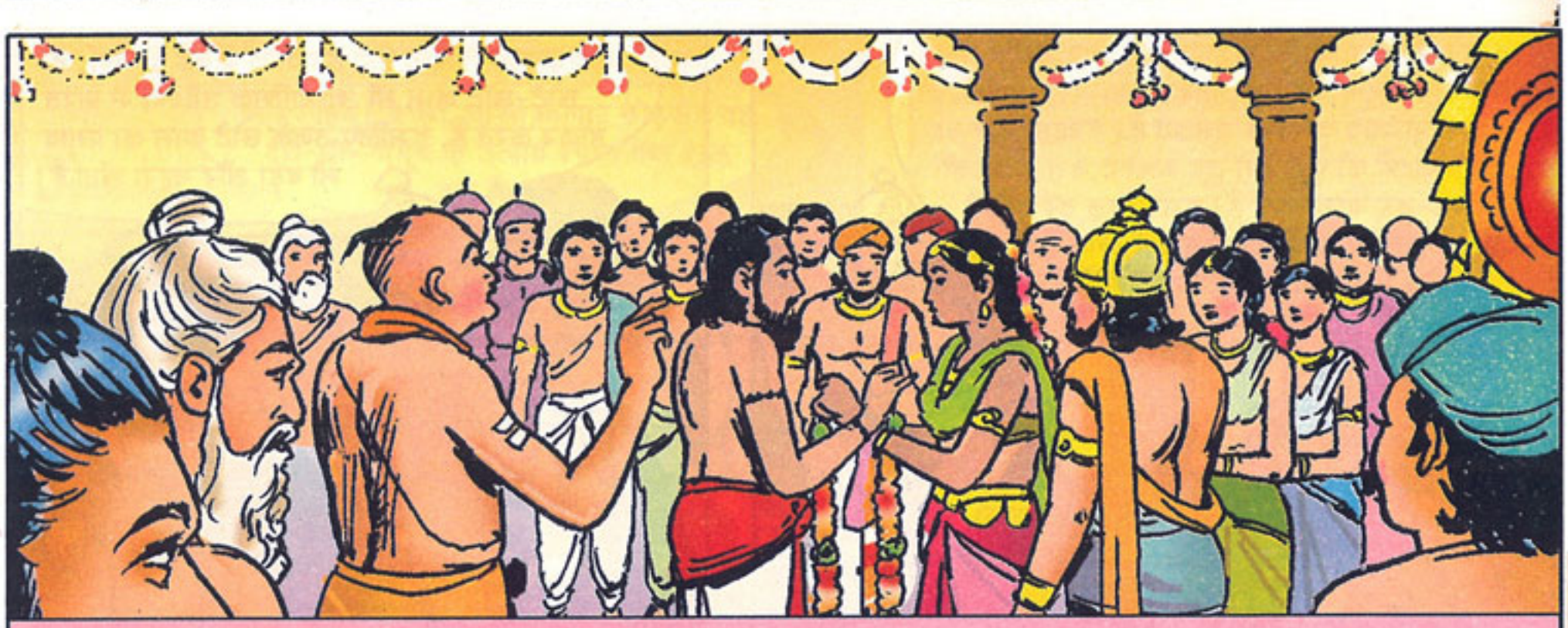

आश्रमों में गौ-धन होने से बेटी को वन में कोई अभाव नहीं रहेगा, यह सोचकर मोहग्रस्त राजपरिवार भी अपनी कोमल राजकुमारियों को ऋषियों को देने की हिम्मत कर पाते थे।

सुरभि शोध संस्थान

चित्रकूट, ३७ए, लेन न.५, रवीन्द्रपुरी, बनारस (उ.प्र.) दूर: (०५४२) २२७६४६०

- नस्ल संवर्धन : गोद्रोही नीतियों के कारण गंगातीरी नस्ल १.५-२ लीटर दूध देनेवाली कमजोर नस्ल बनी। उसे १५ लीटर तक पहुँचाया एवं अभी और संवर्धन किया जा रहा है।
- १ एकड़ पर आधारित स्वावलंबी गाय-बैल और ५ व्यक्तियों के परिवार का सफल प्रयोग।

संत श्री आसाराम गोशाला, निवाई, जयपुर

धूपबत्ती निर्माण से बने १५० परिवार स्वावलंबी

८.चमत्कार को नमस्कार

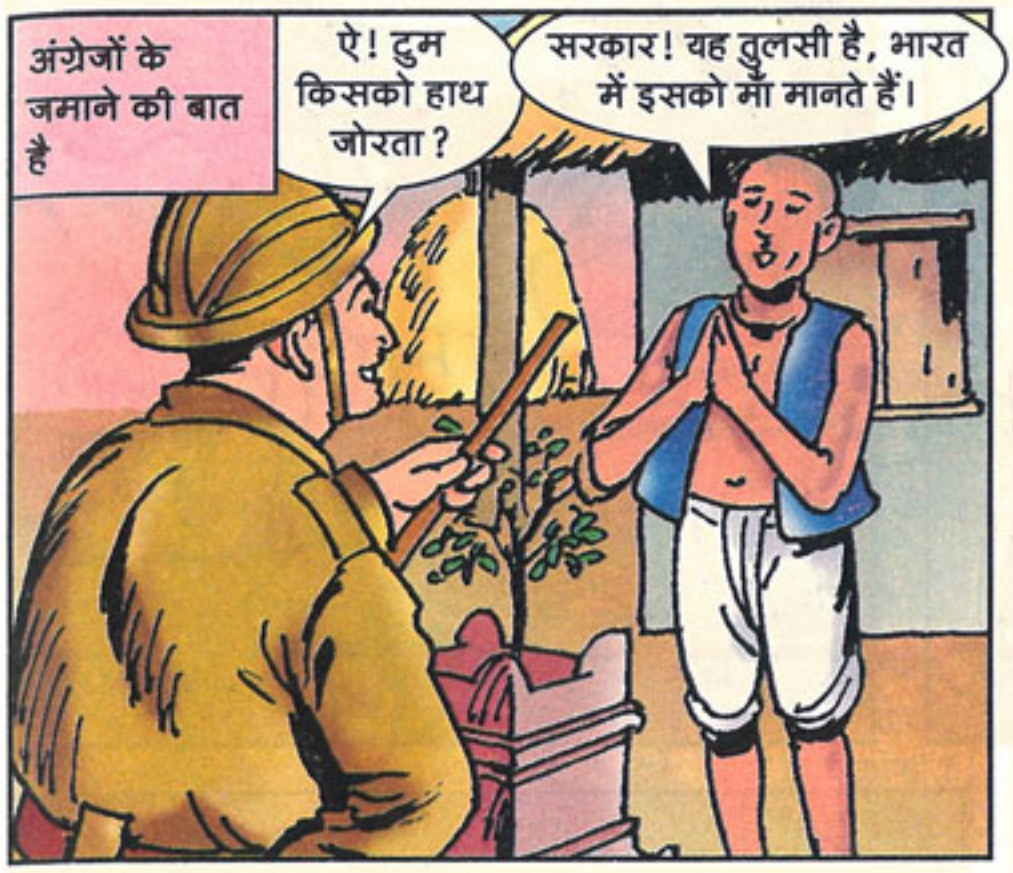

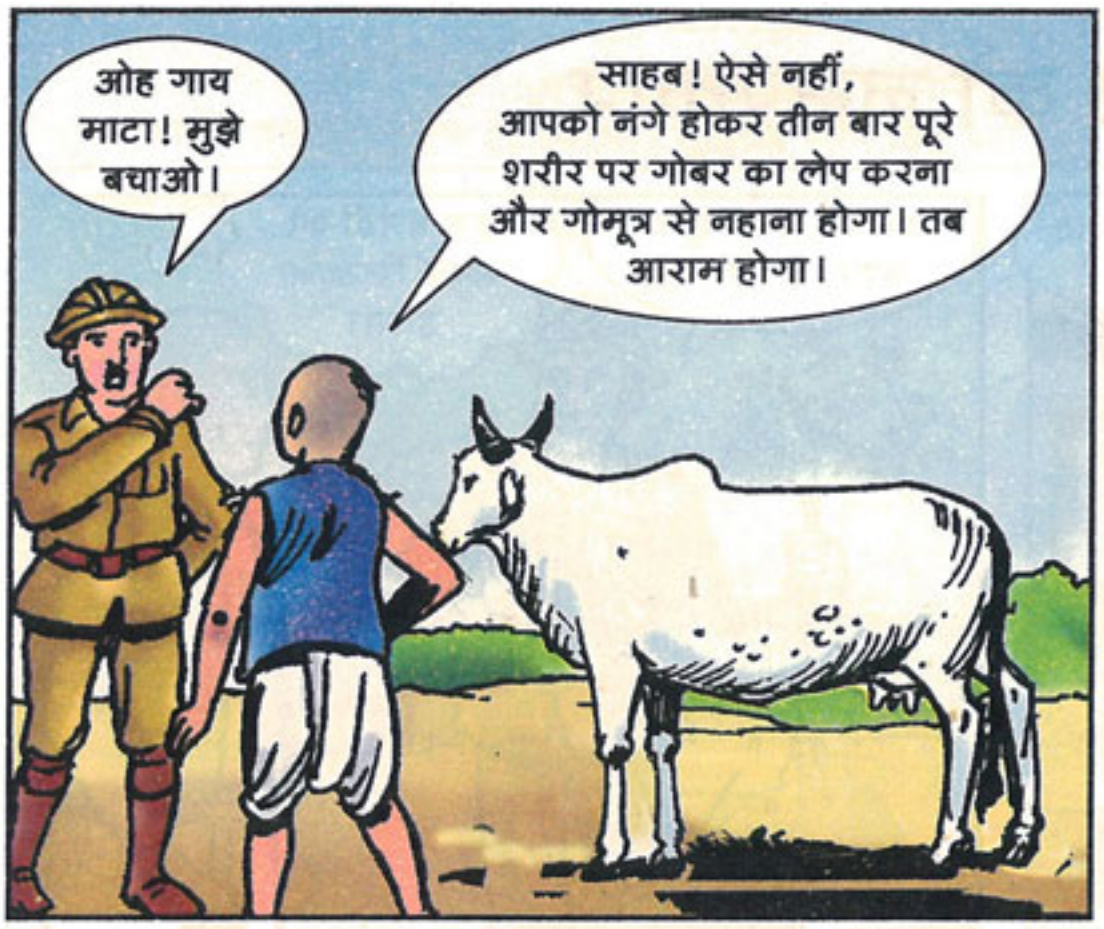

आदर्श गोसेवा एवं अनुसंधान प्रकल्प, अकोला (महाराष्ट्र)

तोष्णीवाल धर्मशाला, महात्मा गांधी रोड, अकोला. दूर.०७२४ - २४२५६७३

- गोबर-गोमूत्र से विभिन्न उत्पादों काणि करनेवाली भारत की पहली गोशाला
- जिले के ८६५ गाँवों में ९,००० कार्यकर्ता खड़ी करनेवाली आदर्श गोशाला
- उत्पादों के निर्माण का नि:शुल्क प्रशिक्षण
- पूरे देश में गाय का दूध भैंस के दूध से सस्ता बिकता है। इस गोशाला ने गाय का महत्त्व समाज को समझाया, जिससे गाय का दूध भैंस के दूध से अधिक दाम पर बिक रहा है। फलस्वरूप बहुत से लोग गोपालन के लिए प्रेरित हुए।

संत श्री आसाराम गोशाला, निवाई, जयपुर (राजस्थान)

- धूपबत्ती निर्माण से बने १५० परिवार स्वावलंबी

९. जहाँ-जहाँ पैर पड़े बैल के

अजय के दादाजी के खेत की चीजें खाकर निशीथ विस्मित था।

दादाजी! निशीथ पूछ रहा था कि तुम्हारे खेत की हर उपज इतनी स्वादिष्ट क्यों लगती हैं?

आजकल सब रासायनिक खादों का प्रयोग करते हैं। इससे अन्न, सब्जी, फल सब बेस्वाद हो गये हैं। हम जैविक खेती करते हैं, इसलिए यहाँ की उपज इतनी स्वादिष्ट हैं।

लेकिन इससे तो पैदावार कम होती होगी? घाटा होता होगा?

जब मैंने रासायनिक खेती शुरू की, तो १ लाख रुपये का माल बेचा और ५० हजार रुपये खर्च हो गये। हर वर्ष उत्पादन घटते रहने पर भी भाव बढ़ने से आय १ लाख दिखती रही। लेकिन खर्च ८५ हजार तक बढ़ गया।

केवल १५ हजार की कमाई!

''मतलब केवल मेरी मजदूरी, लाभ शून्य। ऐसे में मैं भी दूसरे किसानों की तरह टूटे-फूटे घर में मुँह लटकाये रहता, लेकिन जो बीज-खाद-कीटनाशक- डीजल-ट्रैक्टर का सामान बेचते, उनके गाँव और शहर में बंगले बन गये।''

''ये सब पैसा तो खेती से ही गया था। इसलिए मैंने रासायनिक खेती बंद कर बैलों से खेती शुरू कर दी। देशी बीज बोया, गोबर से कंपोस्ट खाद बनाकर डाली, ऐसी फसल बोयी जिनको कीड़ों से अधिक नुकसान नहीं होता।''

रासायनिक खाद के कारण खेत बंजर हो गया था। फसल हुई सिर्फ ३० हजार की, लेकिन खर्च आया मात्र १६ हजार।

केवल १४ हजार की कमाई। पहले से भी १ हजार कम।

''एक दिन एक थकी गाय आकर मेरे दरवाजे के सामने खड़ी हो गई। मुझे लगा कि वह मुझे कह रही है''

तुम मेरी रक्षा करो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी।

''मैंने गौ माता को प्रणाम किया, चारा दिया और अपने घर में रख लिया।''

उसके गोबर-गोमूत्र से विविध खाद और कीटनियंत्रक बनाकर उनका प्रयोग किया। दूसरे वर्ष २० हजार का लाभ हुआ। सातवें वर्ष १ लाख की आय हुई और खर्च किया सिर्फ १५ हजार।

अमृत पानी

कीट नियंत्रक

नादेप कंपोस्ट

मटका खाद

मतलब ८५ हजार का लाभ। वाह ! इससे आपको भी लाभ हुआ और लोगों को भी स्वादिष्ट चीजें मिली।

केवल स्वादिष्ट ही नहीं। रासायनिक खेती ने तो पूरा अन्न जहरीला कर दिया है। इसी कारण आज इतने रोग फैले हैं। अच्छा बताओ, भारत में पहले आतंकवाद कहाँ शुरू हुआ ?

पंजाब

असम

अब बताओ, सबसे पहले जहरीली रासायनिक खेती जिसे हरित-क्रांति कहा गया, कहाँ शुरू हुई ?

पंजाब और असम में।

समझ गया-समझ गया, जैसा अन्न - वैसा मन; जहरीला अन्न - जहरीला मन। मन जहरीला होते ही आदमी अपनों से ही लड़ने लगता है। अन्न स्वस्थ होगा तो तन-मन भी स्वस्थ होंगे।

ट्रैक्टर बैलों से 90 गुणा तेजी से काम करते है, जिससे नुकसान कम और फायदा अधिक होता है। इसलिए ट्रैक्टर का उपयोग तो किया जा सकता है।

लेकिन इसके भार से खेत को उपजाऊ बनानेवाले, कीटाणुओं को खानेवाले असंख्य केचुएँ आदि जीव दबकर मर जाते हैं। इससे जैविक खेती हो ही नहीं सकती और रासायनिक खादों व कीटनाशकों का सहारा ही लेना पड़ेगा।

मतलब किसान फिर उसी चक्रव्यूह में फँस जायेगा।

शाबास! धान में ही समाधान है।

क्षमा करे दादाजी। मैं तो आपको एक सामान्य किसान ही समझ रहा था, लेकिन आपने तो समाज और देश की बहुत बड़ी समस्या का हल भी बता दिया।

''संस्कृत का एक शब्द है कृष्। कृष् का अर्थ है खींचना। यशोदा का बेटा सबको अपनी ओर खींच लेता था। इसलिए उसका नाम कृष्ण रखा गया।''

''कृष् से बना है कृषि। इसका अर्थ है सूर्य की ऊर्जा को खींचकर अन्न उगानेवाली खेती। बैल सींगों से इसे खींचकर खुरों से भूमि को देकर कृषि में सहयोग करता है। इनके मरने पर भी यह शक्ति सींगों में रहती है।''

''मरी हुई गाय के सींग के खोल में गोबर भरकर गाड़ देने पर कुछ ही दिनों में उससे सफेद मूल (जड़) चलने लगते हैं और कुछ महीनों में खाद बन जाता है। एक सींग की खाद से तीन एकड़ भूमि उपजाऊ हो जाती है।''

दिन भर चरकर शाम को गायों का झुं
है, तो उनके खुरों से धूल उड़ती है,
समय गोधूलि कहलाता है। इस धू
से बहुत से चर्म रोगों का न
हो जाता है।

पूजा-हवन में गाय का ही घी-दूध-गोबर-गोमूत्र काम में लिया जाता है।

सचमुच, गाय-बैल भी संतों से कम नहीं।

१०. सबकी प्यारी गौ माता

समुद्र मंथन के समय बहुत से दिव्य रत्न निकले - उच्चैश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, लक्ष्मी, कामधेनु गाय, वैद्य धन्वन्तरि, अमृत।

गाय में ३३ कोटि देवता रहते हैं। गाय की पूजा करने से सभी देवताओं की पूजा हो जाती है।

कोटि अर्थात् वर्ग -
८ वसु + १२ आदित्य + ११ रूद्र + २ अश्विनी कुमार = ३३

जब-जब पृथ्वी पर संकट आया, उसने गाय का रूप धारण कर भगवान की स्तुति कर उन्हें प्रसन्न किया। इसलिए पृथ्वी का एक नाम गो है।

गाय में पृथ्वी पूरी तरह व्यक्त होती है, इसलिए गोरक्षा वास्तव में पृथ्वी की रक्षा है। वैज्ञानिकों को इस दिशा में अध्ययन करना चाहिए।

पूजा-हवन में गाय का ही घी-दूध-गोबर-गोमूत्र काम में लिया जाता है।

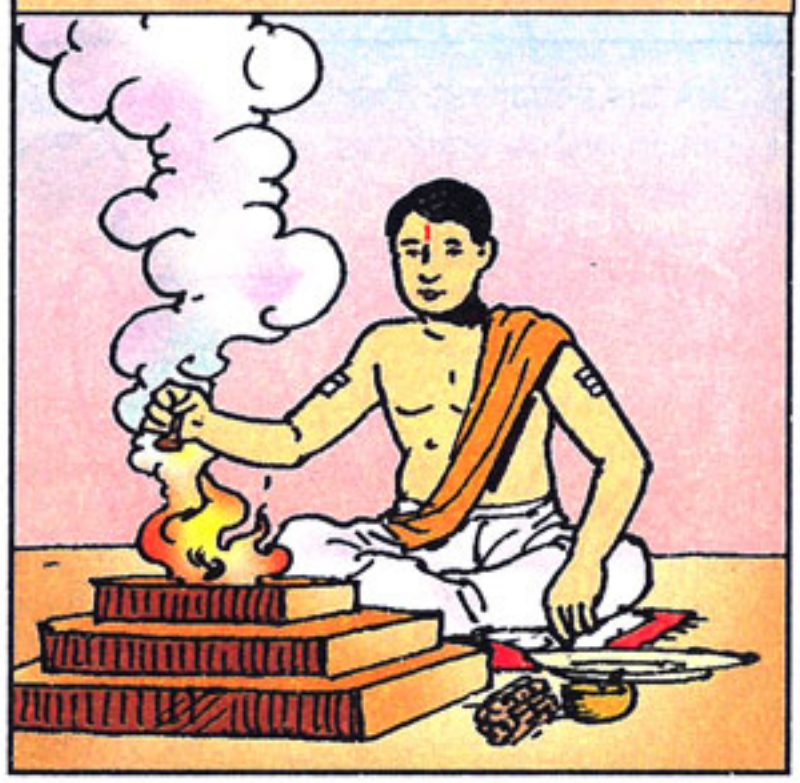

शिवजी का वाहन नंदी (साँड) है जबकि भैंसा तो यमराज का वाहन है।

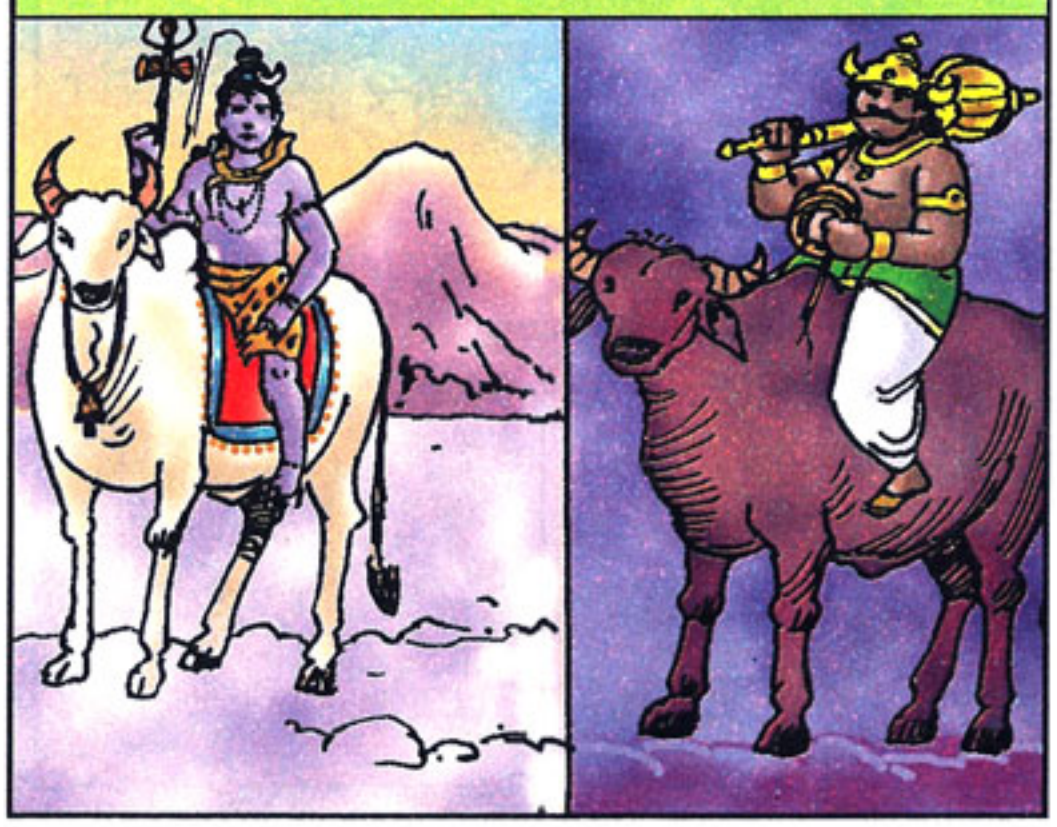

राजा दिलीप ने संतान प्राप्ति की कामना से नंदिनी नाम की गाय की सेवा की।

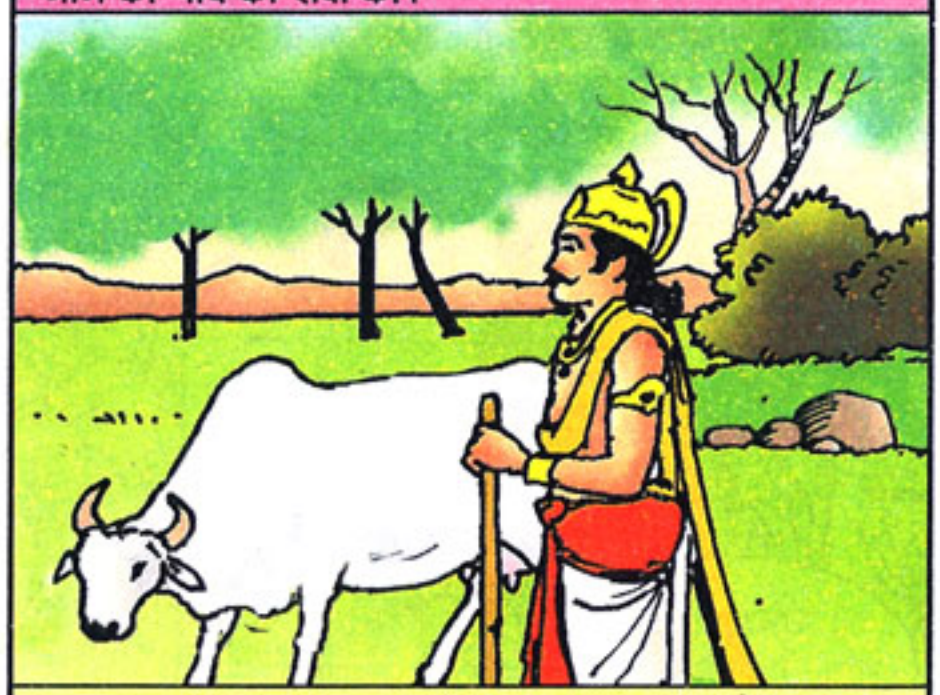

नंदिनी ने राजा की परीक्षा लेने का विचार किया और जैसे ही राजा का ध्यान दूसरी ओर गया अचानक....

...दुर्गा माता के शेर ने नंदिनी पर आक्रमण कर दिया।

हे दुर्गा माता के वाहन! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप नंदिनी माता को छोड़ मुझे खा लें।

राजन्! तुम पर राज्य का दायित्व है। एक गाय के लिए राजा का बलिदान होना अधर्म होगा। मेरे आशीर्वाद से तुम्हारे संतान होगी, अब जाओ।

लेकिन राजा टस से मस नहीं हुए।

नंदिनी प्रसन्न हुई, उसके आशीर्वाद से महाप्रतापी रघु का जन्म हुआ। रघुवंश में भगवान राम का जन्म हुआ।

गो का पालन करने से भगवान कृष्ण का नाम गोपाल पड़ा।

बाँसुरी की धुन से गाय स्वस्थ व प्रसन्न रहती है और उसका दूध बढ़ जाता है। इस विज्ञान को श्रीकृष्ण ने प्रकट किया।

जैनों के पहले तीर्थंकर ऋषभदेव ने संसार को बैल से खेती करना सिखाया, इसीलिए बैल को ऋषभ भी कहा जाता है।

बुद्ध ने कहा

जैसे माता-पिता, भाई, परिवार के लोग हैं, वैसे ही गायें भी हमारी परम मित्र हैं और औषधियों को जन्म देनेवाली हैं।

पूजा-हवन में गाय का ही घी-दूध-गोबर-गोमूत्र काम में लिया जाता है।

कुरान शरीफ में लिखा है - न तो उनका मांस और न ही उनका रक्त अल्लाह तक पहुँचता है; केवल तुम्हारी दया उस तक पहुँचती है। (२२.३७)

११वी सदी में इस्लामी अकादमी के संस्थापक अलगजाली ने लिखा गाय का मांस मर्ज (बीमारी), दूध सफा (स्वास्थ्यप्रद) और घी दवा है।

यही देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाऊं।
गऊ घातका दोष जग सिउ मिटाऊं।
यही आस पूरण करो तुम हमारी।
छूटे कष्ट गैयन मिटे खेद भारी।।

अर्थात् गुरू गोविन्दसिंह ने देश और धर्म की रक्षा के लिए सिख बने वीरों को आज्ञा दी - गौ हत्यारे मुगलों का नाश कर गौ-हत्या का दोष जग से खत्म करो। गायों का कष्ट मिटे और इस दुख का अंत हो, इस आशा को पूरी करो।

२५,७४० मनुष्य एक गाय के जन्मभर के दूधमात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं.....और इसके मांस से केवल ८० मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं।

स्वामी दयानंद सरस्वती की छोटी-सी पुस्तक 'गो-करुणानिधि' ने अंग्रेजों के दुष्प्रचार का मुँहतोड़ जवाब दिया।

बैल को पीटने से स्वामी रामकृष्ण परमहंस की पीठ पर बेंत के निशान पड़ गये।

आह !

ऋषियों ने कहा

हमारा ध्येय है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' - पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाना।

विश्व के सबसे बड़े संगठन 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने गाय काटने के लिए खड़े कसाइयों से कहा

तुम्हें गाय के मांस से जितने रुपये मिलेंगे, वे ले लो और गाय मुझ दे दो।

हम गाय नहीं, मांस ही देंगे।

शेष समाज डर के मारे चुपचाप खड़ा रहा।

डॉ. हेडगेवार की गाय के लिए बलिदान होने की तैयारी और उग्र रूप देख कसाई डर गये और रुपये ले गाय उन्हें दे दी।

बैलगाड़ी में जुती गाय को देख युवा श्रीराम शर्मा उसे खोल स्वयं बैलगाड़ी में जुत गये और 90 कि.मी. दूर उसे छोड़कर आये।

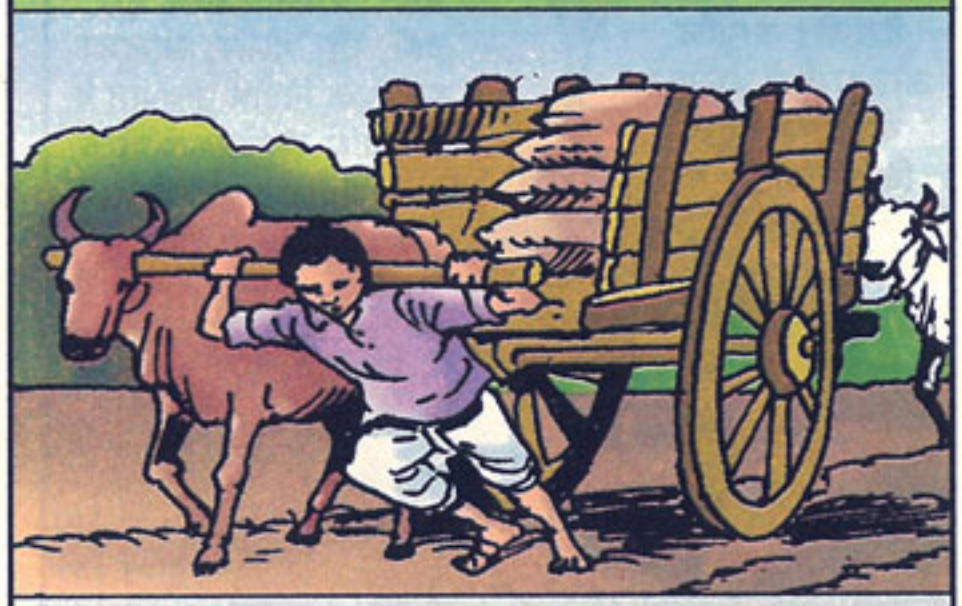

उन्होंने २४ वर्ष गायत्री मंत्र का जप करते हुए कठोर तपस्या की। इसमें इनका आहार था - गोबर से निकले जौ की रोटी और गाय की छाछ। उनसे लाखों युवकों ने समाज की सेवा की प्रेरणा ली।

गाय सभी महापुरुषों की प्यारी रही है।

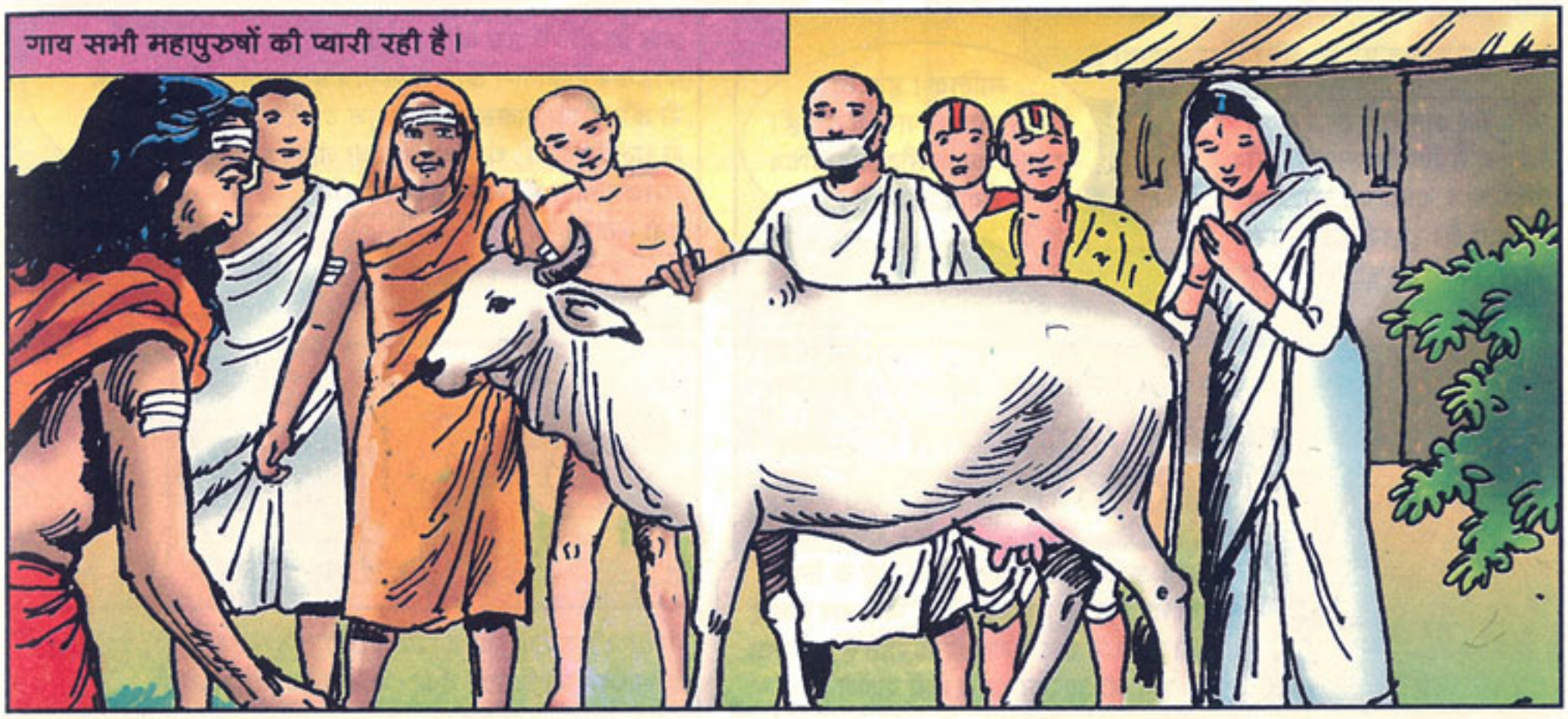

श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा (राजस्थान)

श्री गोधाम महातीर्थ आनंदवन-पथमेड़ा, त. सांचोर, जि. जालोर (राज.), दूर : ०२९७९-२५३१०२

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम श्रद्धेय स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज

- विश्व की सबसे बड़ी गोशाला
- सन् २००३ के भयंकर अकाल में ३ लाख गायों को आश्रय दिया।
- हर वर्ष १०,००० कमजोर गोवंश को स्वस्थ बनाकर घरों में रखवाना।

११. पंचगव्य

वैद्यजी! आयुर्वेद और धर्म में पंचगव्य को बहुत महत्त्व दिया गया है, यह क्या है?

गव्य यानी गाय से प्राप्त। पंचगव्य यानी दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र। इन्हें एक विशेष अनुपात व मंत्र विधि से मिलाने से जो दिव्य औषधि बनती है, उसे भी पंचगव्य कहते हैं।

धर्म का अर्थ है ? एक ऐसी व्यवस्था, जो मनुष्य को नीचे गिरने से रोके और ऊपर उठने में सहायता करे क्योंकि मनुष्य देवों से भी ऊपर उठ सकता है....

.....तो दानव से भी नीचे गिर सकता है

नेताजी! आपने ऐसा कानून बनाया है कि केवल बूढ़ी और विकलांग गायों को काटा जा सकता है। इससे तो हमारा कत्लखाना ही बंद हो जायेगा।

मालिक! हम तो केवल कानून पास करते हैं। कानून का मसौदा तो सचिव तैयार करते हैं।

सर! आपको पता है, गोहत्या-बंदी के लिए जनता का कितना दबाव है?.... जब आप हमारे विदेशी खाते में धन जमा कराते रहते हैं, तो क्या हम भी आपका ध्यान नहीं रखेंगे?

आप किसी भी उम्र की गाय-बैल के पैर तोड़कर या आँख फोड़कर विकलांग का प्रमाण-पत्र बनवा लो। फिर काटने से कौन रोक सकता है? कानून यानी जनता की आँखों में धूल झोंकना, धंधा बंद करना नहीं। हम नमकहलाल हैं, नमकहराम नहीं? क्यों नेताजी?

हा..हा..हा

भारत की गरीबी का कारण बढ़ती जनसंख्या नहीं, देशद्रोहियों के माध्यम से विदेशी बैंकों में गये खरबों रुपये हैं।

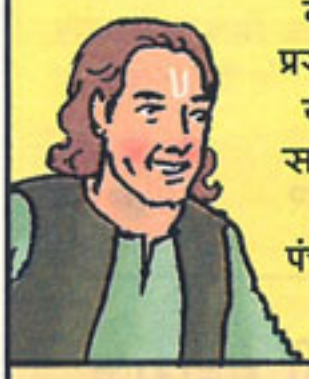

मनुष्य के जीवन में ऐसे १६ प्रसंग आते हैं, जब वह ऊपर या नीचे जा सकता है। उस समय संस्कार किये जाने से वह ऊपर उठ सकता है। पंचगव्य बिना ये १६ संस्कार संभव नहीं।

१६ संस्कार हैं

गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म (मुंडन), कर्णविध, यज्ञोपवीत, विद्यारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास, अंत्येष्टि।

हिन्दुओं ने इन १६ संस्कारों का आविष्कार किया और गाय के महत्त्व को समझा। इसलिए हिन्दू धर्म में गाय का विशेष महत्त्व है।

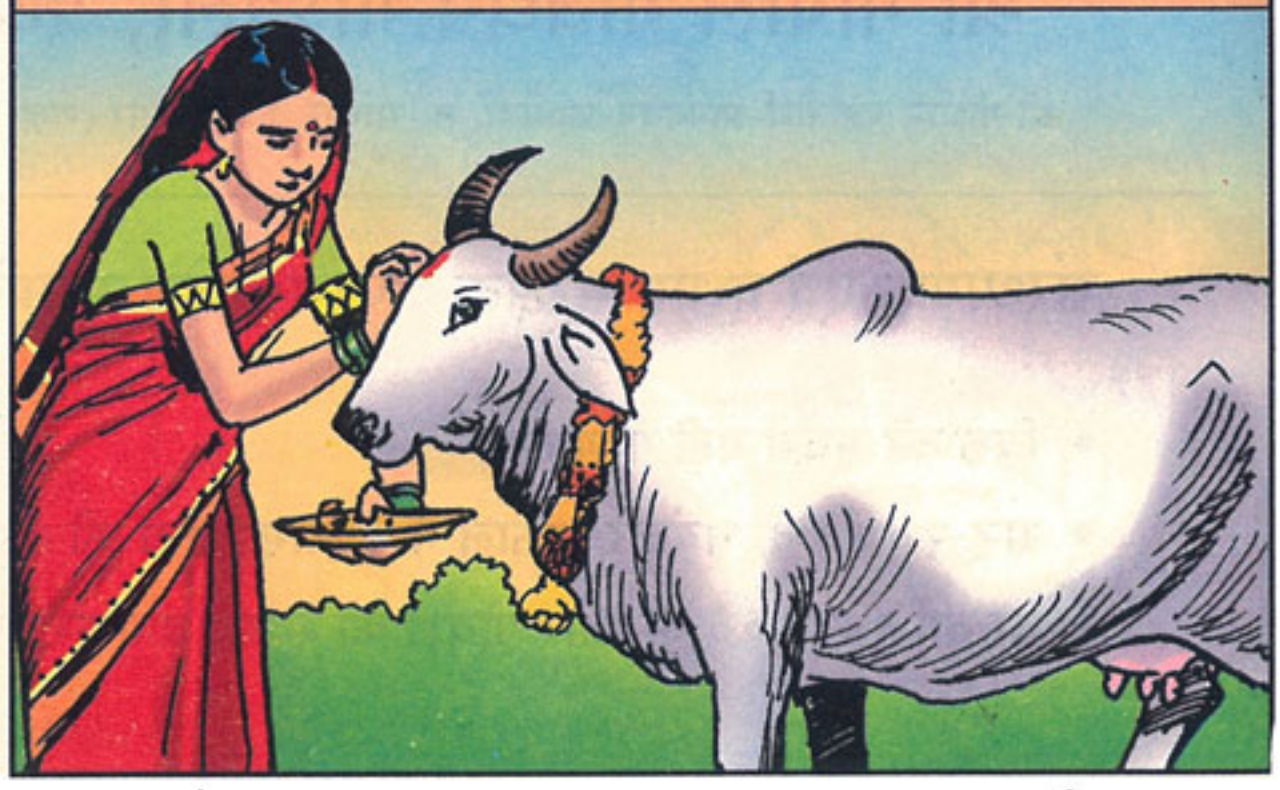

१३. क्या हम आजाद हैं?

एक ट्रक में ६ गायों को ले जा सकते हैं, लेकिन एक ट्रक में ५२ गायों को लादकर ले जाया जा रहा था।

बजरंग भैया! ये गायों को इतनी क्रूरतापूर्वक कहाँ ले जा रहे थे?

काटने के लिए। हमारे देश में हर दिन लगभग ५० हजार गायें कटती हैं।

क्या हमारे देश के मुसलमान गाय का मांस खाते हैं?

हाँ और ६0% विदेश जाता है ।

अरब और मुस्लिम देशों में?

गौ का मांस ठंडे प्रदेशो मे काफी पसंद किया जाता है अरब आदि देशो मे गाय के चमड़े से बनी कई वस्तुओं का निर्यात किया जाता है ....भारत से प्रतिदिन २०० टन गाय का चमड़ा अरब और युरोपियन देशो मे भेजा जाता है

BEAF

२०० टन ?

हाँ । विदेशी नकल आधारित लुभावने विज्ञापनो और भ्रस्ट बोलिवुड़ / मिड़िया / सरकारों के षड़यंत्र ने हमारे नौजवानो के जीवन को नर्क बना दिया है ये सब षडयंत्र है जिसे युवा नही समझ रहे है !

मानसिक गुलामी के कारण पश्चिम की नकल करना और अपनी परंपराओं को तोड़ना, इन दोनों को आज नवयुवक क्रांति समझने लगे हैं। यह उसी का दुष्परिणाम है।

इसे रोकने का उपाय क्या है?

गाय सिर्फ मांस के लिए ही नहीं कटती। इसका चमड़ा, खून,चर्बी, हड्डी सब बिकते हैं। क्या तुम जानते हो, गाय को कैसे काटा जाता है?

नहीं।

कहीं-कहीं गाय को काटने के पहले ३-४ दिन तक भूखा-प्यासा रखा जाता है। इससे कटने के बाद मांस सफेद नहीं पड़ता, लाल रहता है और महंगा बिकता है। काटने से पहले उसे बहुत देर तक बेंत से पीटा जाता है। इससे चमड़ा मांस से अलग हो जाता है

कहीं उस पर तेज गर्म भाप छोड़ी जाती है। इससे उसके रोएँ झड़ जाते हैं। गाय बुरी तरह चिल्लाती है।

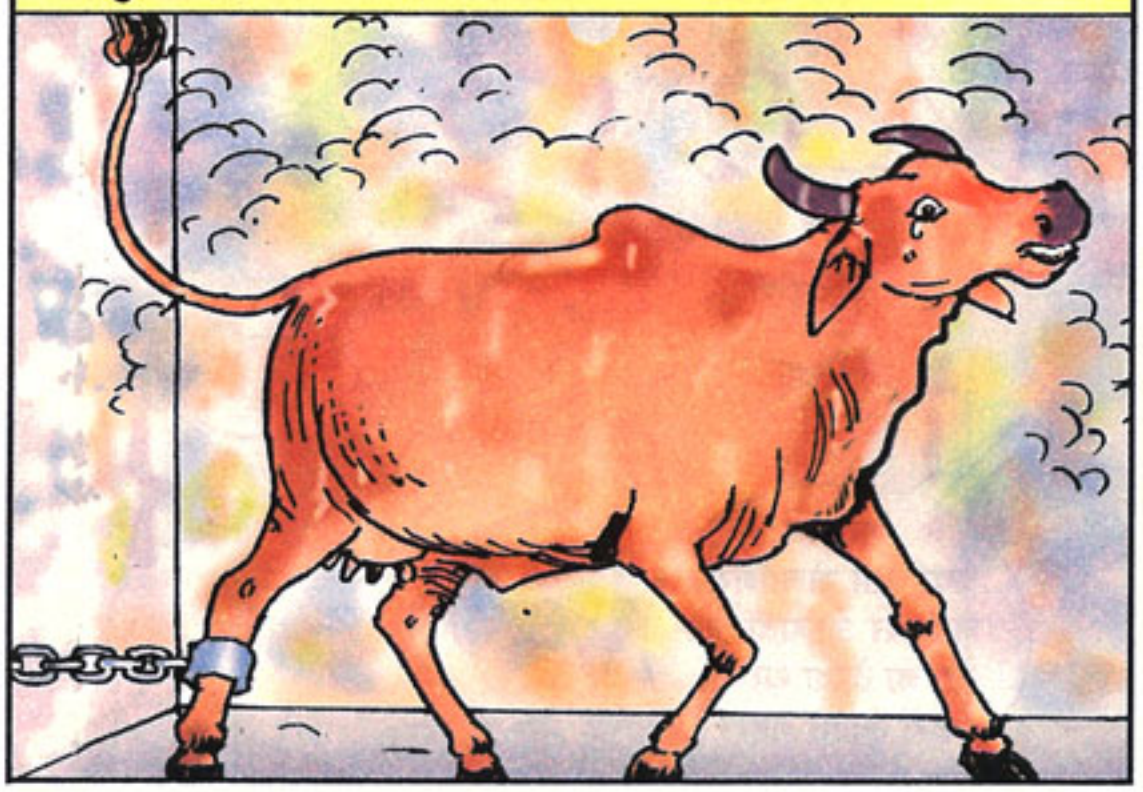

कहीं गाय के शरीर में पिचकारी जैसे मोटे इंजेक्शन से हवा भरी जाती है। गाय बुरी तरह से तड़पड़ाती है।

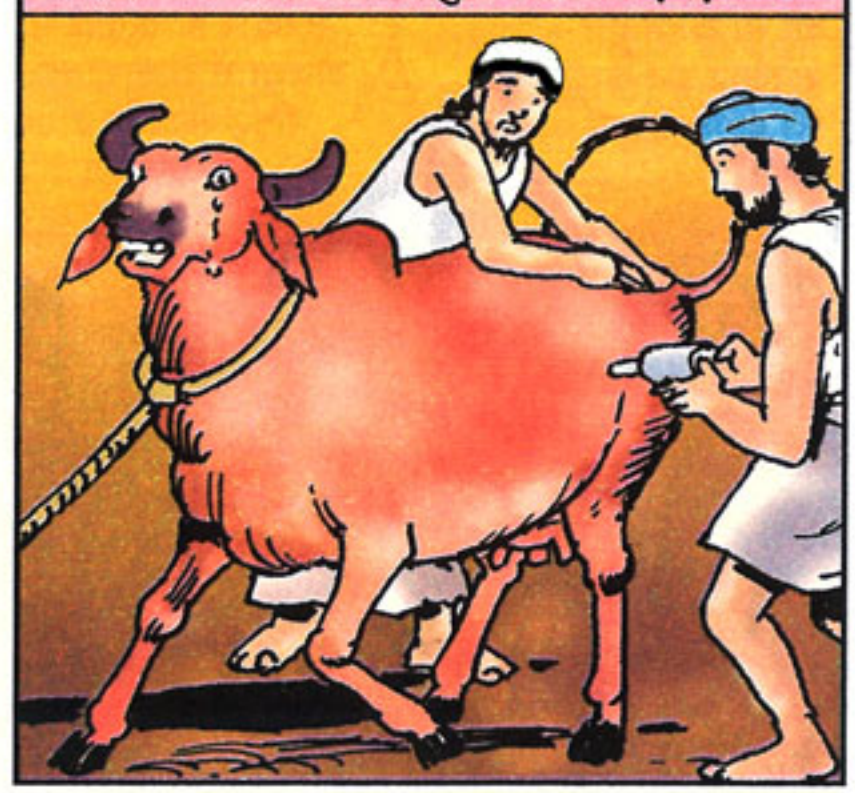

कहीं उसे मशीन से उल्टा लटकाकर उसके गले पर आरी चलायी जाती है और खून इकट्ठा किया जाता है।

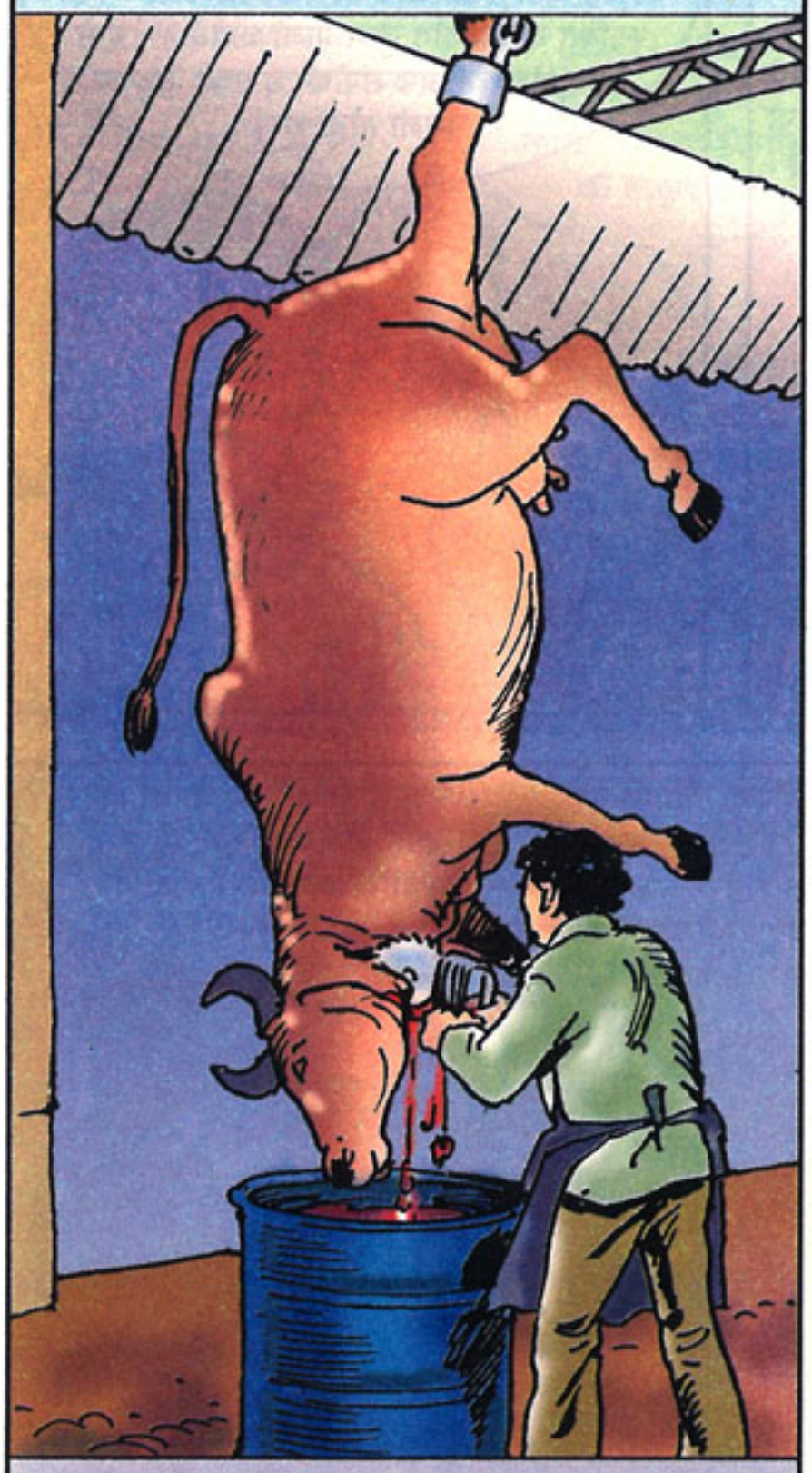

खून बढ़ानेवाले टॉनिकों में इसका उपयोग करनेवाली कंपनियाँ इसे खरीदती हैं।

कहीं जिंदा गाय की नरम-नरम खाल को खींच-खींचकर निकाला जाता है।

नरम-नरम जूते-चप्पल, पर्स, बेल्ट आदि बनानेवाली कंपनियाँ इसे खरीदती हैं।

हड्डियाँ

टूथपेस्ट, कैप्सूल, दर्द निवारक गोलियाँ आदि बनानेवाली कंपनियों के काम आती हैं।

चर्बी

सुगंधी साबुन, क्रीम बनानेवाली कंपनियाँ खरीद लेती हैं।

छी! ये सब भारत में होता है, जहाँ हम गाय को माँ कहते हैं? सरकार इन कत्लखानों को बंद क्यों नहीं करती?

तुम्हें जानकर बहुत दुख और आश्चर्य होगा कि इनमें से बहुत से कत्लखाने सरकार ही चलाती है। ११वीं पंचवर्षीय योजना में कत्लखानों को बढ़ावा देने के लिए सरकार ३,००० करोड़ का अनुदान दे रही है।

मतलब स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस आजादी का सपना देखा था वह हमें मिली नहीं।

जैसे अंग्रेज सरकार अपनी कंपनियों के हित में नीतियाँ बनाकर हमें लूटते थे, वैसे ही आज गोहत्या से लाभ उठानेवाली कंपनियों के हित में हमारे देश में नीतियाँ बन रही है?

हाँ। देश की जनता इसे समझ न सके। इसलिए गोहत्या-बंदी का माहौल बनते ही 'इस्लाम खतरे में' का नारा लगाकर दंगे भड़काये जाते है। इससे मूल बात से सबका ध्यान हट जाता है।

मतलब जनतंत्र की आड़ में देश में कंपनी तंत्र चल रहा है।

हाँ । अंग्रेजो ने एक बीफ क्लब बना रखा था जो स्वयं को अंग्रेजभक्त साबित कर विशेष कृपा पाना चाहते थे, ऐसे हिन्दू नेता या अफसर को इसका सदस्य बनना होता था जवाहरलाल नेहरु भी इस क्लब के सदस्य थे ।

जब भारत की आजादी का समय आया, तब अंग्रेजो ने जवाहरलाल नेहरु जैसे अपने सभी वफादारों को बुलाकर कहा

हमें तो जाना होगा, लेकिन एक वादा करो कि हमारी १२७ कंपनियाँ चलती रहेंगी। गोहत्या बंद होने से बहुत सी कंपनियाँ ही बंद हो जायेंगी।

एक ईस्ट इंडिया कंपनी को छोड़ शेष कंपनियों को हम बचा सकते हैं। गोहत्या बंद नहीं होने देंगे।

''आजादी मिली, लेकिन व्यवस्थायें नहीं बदली, इसलिए ऊँचे-ऊँचे पदों पर ये अफसर बैठे रहे और कुछ ऊँचे मंत्री पद हथियाने में सफल रहे।''

''हमने जो ब्रिटिश संसदीय प्रणाली अपनायी है, वो 'बाँटो और राज्य करो' पर आधारित है। इसी कारण आजादी के बाद जयप्रकाश नारायण जैसे बहुत से स्वतंत्रता-सेनानियों ने बड़े-बड़े पद ठुकरा दिये।''

यह प्रशासन व्यवस्था भी अंग्रेजी कंपनियों द्वारा भारत की लूट के लिए ही बनाई गई थी। जो आज भी चल रही है। धर्म पर चलनेवाले सरल लोगों में बेईमानी इसी व्यवस्था ने फैलाई।

गोहत्या बंदी से कंपनी तंत्र की जड़े हिल जायेंगी।

मतलब गोरक्षा की लड़ाई देश को सच्ची आजादी दिलाने की लड़ाई है।

मुझे बम मिल जाये तो मैं इन सब कत्लखानों को उड़ा दूँ।

तो नये कत्लखाने खड़े हो जायेंगे।

तब तो सारे कसाइयों के हाथ ही काट दिये जाने चाहिए।

''यह सजा तो कसाइयों को प्रकृति खुद ही देती है। ४० वर्ष के बाद कसाइयों के हाथ बेकार हो जाते हैं। कुछ की तो कुष्ठ रोग से हाथों की उंगलियाँ ही गल जाती है।''

इतना होने पर भी इन कसाइयों को अक्ल नहीं आती ?

पुरे देश मे गौ हत्या पर पुर्ण प्रतिबंध लगा देना चाहिये और कठोर दंड का प्रावधान रखना चाहिये, लेकिन वोट बैंक की लालची सरकारे, भ्रष्ट पार्टीयाँ एसा होने नही दे रही गौ हत्यारों और कंपनियो का बहिष्कार हि एक मात्र उपाय है

मतलब पूर्ण आर्थिक बहिष्कार।

मैं चमड़े की बनाई किसी चीज का उपयोग नहीं करूँगा।

मरी गाय के चमड़े के उपयोग में कोई दोष नहीं। इसका उपयोग न करने पर देश के लाखों चर्मकार बेकार हो जायेंगे। इनसे बने जूते-चप्पल कड़क होने से ५-७ दिन तकलीफ देते हैं।

नरम चमड़े के लिए गौ माता को जो कष्ट दिया जाता है, उसके सामने इतना सा कष्ट कुछ भी नहीं। लेकिन हमें कैसे पता चलेगा कि कौन सा कत्लखाने का चमड़ा है और कौन सा नहीं ?

''कंपनियों के जूते-चप्पल मत खरीदो। जो गाँव या शहर का चर्मकार बनाता है या शहरों में जो खादी भंडारों में मिलता है, वही खरीदो।''

''इसी तरह टूथपेस्ट की जगह दंतमंजन, साबुन की जगह अंगराग, क्रीम की जगह दूध की मलाई का प्रयोग करो''

CLOCK UP

COLD CREAM

अंगराग

दंतमंजन

उसके गोबर-गोमूत्र से विविध खाद और कीटनियंत्रक बनाकर उनका प्रयोग किया। दूसरे वर्ष २० हजार का लाभ हुआ। सातवें वर्ष १ लाख की आय हुई और खर्च किया सिर्फ १५ हजार।

अमृत पानी

कीट नियंत्रक

नादेप कंपोस्ट

मटका खाद

मतलब ८५ हजार का लाभ। वाह ! इससे आपको भी लाभ हुआ और लोगों को भी स्वादिष्ट चीजें मिली।

''जिस गाय की खूब सेवा होती है, म से गोरोचन मिलता है। गोरोचन बहुत काम आता है। यह इतना मूल्यवान है

वैद्यजी! मैं आपके लिए गोरोचन लाया हूँ।

पूजा-हवन में गाय का ही घी-दूध-गोबर-गोमूत्र काम में लिया जाता है।

गोरोचन = गाय + बछड़ा

मझ में नहीं आ ो गौ माता जीते ने के बाद भी देती है, वो हाथ पहुँचने

मुसलमानों के राज में हिंदुओं को यह जताने के लिए कि वे गुलाम हैं, गायें काटी जाने लगी। लेकिन तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि अधिकांश बादशाहों ने गोहत्या पर प्रतिबंध लगा रखा था।

सुरभि शोध संस्थान

चित्रकूट, ३७ए, लेन न.५, रवीन्द्रपुरी, बनारस (उ.प्र.) दूर: (०५४२) २२७६४६०

- नस्ल संवर्धन : गोद्रोही नीतियों के कारण गंगातीरी नस्ल १.५-२ लीटर दूध देनेवाली कमजोर नस्ल बनी। उसे १५ लीटर तक पहुँचाया एवं अभी और संवर्धन किया जा रहा है।
- १ एकड़ पर आधारित स्वावलंबी गाय-बैल और ५ व्यक्तियों के परिवार का सफल प्रयोग।

संत श्री आसाराम गोशाला, निवाई, जयपुर

धूपबत्ती निर्माण से बने १५० परिवार स्वावलंबी

''अंग्रेजों ने न्याय प्रणाली खत्म कर कानून प्रणाली शुरू की। क्रूर व्यवस्थाओं को मजबूत बनानेवाले नियमों को कानून कहा। इसके खिलाफ आवाज उठानेवालों को सजा देनेवाले कानूनालय को न्यायालय कहा। कानूनाधीश को ही न्यायाधीश कहा। गोहत्या को बढ़ावा देनेवाले कानून जनता पर थोपे गये। 'जंगल कानून' बना जंगल में गायों के चरने पर प्रतिबंध लगा दिया, जिससे गायों का पौष्टिक आहार घट गया।''

''आंजादी के बाद भी जंगल पर गाँव की जगह सरकार का ही कब्जा बना रहा। अब तो कोई जानता भी नहीं कि जंगल सरकार की नहीं, गाँवों की संपत्ति थी।''

''गाँवों के पास गायों के चरने के लिए बड़ी-बड़ी गोचर भूमि होती थी, जिसे अंग्रजों ने अपने वफादारों को बाँटना शुरू कर दिया।''

नालायक, हमको पापी बोलता। सब जमीन सरकार का। हमको गोमांस बहुत पसंद। तुमारा गाय भूखा कैसे मरेगा? हम सबको खा लेगा। हा s हा s हा s

''आजादी के बाद भी वोटों के लिए गोचर भूमि बाँटी जा रही है। इससे गायें भूखी रहने लगी हैं।''

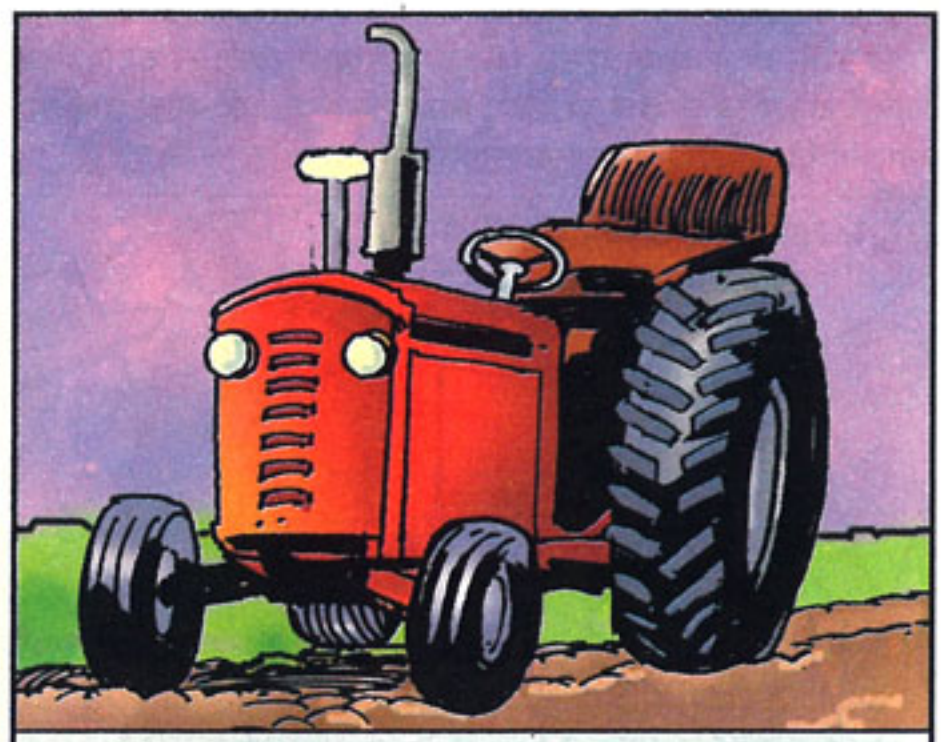

''गायों की उपयोगिता कम करने के लिए बड़ी-बड़ी कंपनियों का सहयोग लिया गया। बैलों को बेकार करने के लिए ट्रैक्टरों को बढ़ावा दिया गया।''

''गाय-बैलों के शक्तिवर्धक आहार 'जौ' पर बियर कंपनियों ने कब्जा कर लिया।''

''तेल निकालने के बाद बची नाइट्रोजन से समृद्ध खली को बहुत बडी मात्रा में सुअर पालनेवाले देशों को निर्यात किया। जिससे गोबर में नाइट्रोजन घट गया। खेतों में नाइट्रोजन की कमी को पूरा करने के लिए यूरिया बनानेवाले कारखाने खड़े किये गये। जनता की खून-पसीने की कमाई से लिये गये कर से इस कृषिनाशक यूरिया पर अनुदान दिया जाता है।''

''घी में मिलावट के लिए तेल को विकृत कर घी जैसा बनाया गया और उस पर प्रतिबंध लगाने की बजाय उसे 'गरीबों का घी - वनस्पति घी' कह गाँव-गाँव पहुँचाया गया।''

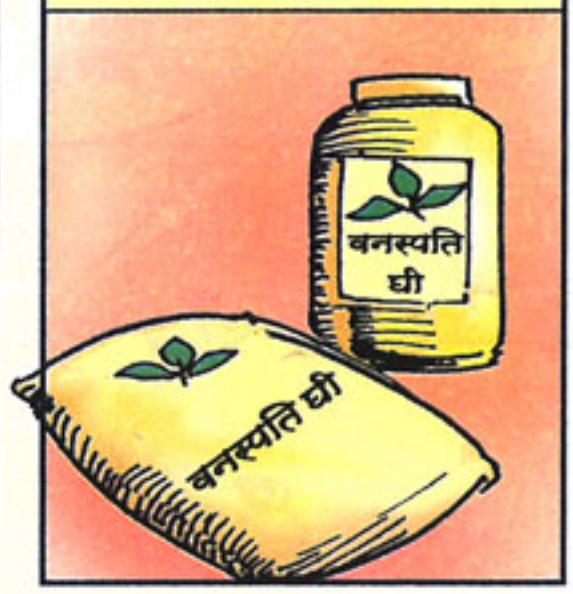

कंपनी-तंत्र की गुलामी में भारत ही नहीं, विश्व के अधिकतर देश जकड़े हैं। आज किसी भी चीज का भाव गुण, उपयोगिता, माँग, लागत आदि से नहीं; बल्कि कंपनियों के स्वार्थ के हिसाब से तय होता है।

तभी तो दूध जैसा अमृत सस्ता और कोल्ड ड्रिंक जैसा जहर महंगा बिकता है।

कहीं भैंस का दूध भी गाय के दूध से इसीलिये तो महंगा नहीं बिकता कि इसमें डेयरी वालों को लाभ अधिक होता है?

बिल्कुल सही। डेयरी वाले कहते हैं कि भैंस के दूध से गाय के दूध में घी कम होता है। इसलिये गाय का दूध सस्ता लेंगे।

लेकिन भैंस के घी को पीतल मानें, तो गाय का घी तो सोना है। इनकी तुलना कैसे हो सकती है?

यह तो हम जानते हैं। लेकिन.....डॉक्टरों ने तो घी को हानिकारक घोषित कर रखा है।

इस दृष्टि से भी देखें, तो जिस दूध में हानिकारक चीज कम है, उसका भाव कम होना चाहिए या अधिक?

दोनों ही तरह से गाय का दूध ही कीमती है, फिर भी उसे सस्ता बेचने के लिए गोपालक को मजबूर करना कितना गहरा षड्यंत्र है, अब समझ में आ रहा है।

मतलब कंपनी तंत्र ने अपने प्रचार से हमारे बुद्धिजीवी वर्ग को इतना नाकारा बना दिया है कि देश की आम जनता की तो बात ही छोड़ो, वह तो खुद का भला-बुरा समझने में भी नाकाम हो गया है।

''देश का नेतृत्व करनेवाले दूरदर्शी मराठों के प्रदेश को, शराब के नशे में डुबाकर बर्बाद करने के लिए महाराष्ट्र में शक्कर कारखाने के नाम पर शराब के बड़े-बड़े कारखाने लगाये गये और वर्ष में चार फसल लेनेवाले किसानों को बर्बाद कर गन्ने की एक फसल लेने को मजबूर किया।''

''उत्तर भारत में घरों में बैल-घाणी से गन्ने का रस निकालकर हजारों प्रकार की चीनी बनाई जाती थी, पर शराब नहीं। भारी कर लगा, इस उद्योग को बर्बाद किया गया। घर में रस निकालने के बाद बची सीठी गायें खाती थी, लेकिन कारखानों की सीठी गायों के खाने योग्य नहीं होती थी।''

गो-विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, नागपुर (महाराष्ट्र)
कामधेनु भवन, चितार ओली, पं. बच्छराज व्यास चौक, महाल, नागपुर. दूर : (०७१२) २७७२२७३

- गोमूत्र को ३ अमेरिकी पेटेंट दिलवाया - औषधि रूप में २ और कीट नियंत्रक के रूप में १
- उत्पादों के निर्माण का नि:शुल्क प्रशिक्षण

कानपुर गोशाला सोसायटी (उत्तरप्रदेश)
गोशाला भवन, जनरलगंज, कानपुर. दूर : (०५१२) ३२४३७२४

- बैल ऊर्जा पर विशेष कार्य - बैलों के द्वारा चलनेवाला ट्रैक्टर, जनरेटर और मोटर

बाबा बलवंतसिंह पंचगव्य चिकित्सा एवं अनुसंधान केन्द्र, जयपुर (राजस्थान)
राजस्थान गोसेवा संघ, दुर्गापुरा, जयपुर -१८. दूर: (०१४१) २५४५९५४ / २५५१३१०

- १९ बिस्तरयुक्त पंचगव्य चिकित्सा केन्द्र

१४. एक और आजादी की लड़ाई

'गो-सुषमा' के घर-घर पहुँचने से हर बस्ती-गाँव-कस्बे-शहर में लोगों में हलचल शुरू हुई। शुरुआत बच्चों से हुई।

मैंने 'गो-सुषमा' पूरे परिवार को पढ़ाई। पूरे परिवार ने इस पर चर्चा की और पिताजी घर में एक गाय ले आये। मेरे पिताजी ने मुझे प्यार से गोपाल कहना शुरू कर दिया।

दूसरा गौभक्त

पिताजी! आप हमारे लिए इतनी मेहनत करते हैं, लेकिन गायें कटती रही तो कल हमें दूध-दही-घी और शुद्ध-सात्विक-स्वादिष्ट अन्न कैसे मिलेगा? करना ही है, तो ऐसा कुछ कीजिये कि हमें हमेशा गायों का लाभ मिलता रहे।

पिताजी व तीन मित्रों ने गायें रख ली, चारों की सेवा के लिए एक जानकार व्यक्ति रख लिया। एक की गाय के दूध देना बंद करने पर, अन्य मित्र उसके घर बारी-बारी से दूध पहुँचा देते हैं।

तीसरा गौभक्त

हमारी कॉलोनी में घरों में गाय रखने की जगह नहीं। मैं पूरी कॉलोनी के 900 घरों में 'गो-सुषमा' बेचकर आया। फिर पिताजी ने सबकी बैठक बुलाई।

बैठक में

हम पास के सुखरामजी गूजर की एक-एक गाय के पालक बन जाते हैं।

हम रोज उससे गोमूत्र लेंगे, बदले में प्रत्येक हर माह उसे 10 किलो तिल की खली देंगे।

इससे तेल-घाणी के बैल को रोजगार मिलने से बैल रक्षा भी होगी और हमें घाणी का पौष्टिक तेल भी मिलेगा।

वाह! इससे घी भी अच्छा निकलेगा, यह दूध हम भैंस के दूध से भी दो रुपये अधिक देकर खरीदेंगे।

गोग्रास की रोटी, फल-सब्जी के छिलके और बची हुई रसोई गाय को दे देंगे। फ्रिज बीमारी का घर है, उसमें कोई चीज नहीं रखेंगे।

चौथा गौभक्त

समझाने पर भी जब घर में गौ-हत्या से लाभ कमानेवाली कंपनियों का माल आना बंद नहीं हुआ, तो मैंने भूख हड़ताल कर दी। दो दिन भूखा रहा। मेरी जिद पर खूब चर्चा हुई, आखिर सब मुझसे सहमत हो गये।

पाँचवाँ गौभक्त

रमाकांतजी ने शिक्षा पूरी कर कमाई के अच्छे अवसर छोड़ मामूली मानधन लेकर गोरक्षा के कार्य में अपना जीवन लगाकर आदर्श गोशाला खड़ी करने में सहयोग किया। मेरी भी शिक्षा का अंतिम वर्ष है, मैं भी यही करूँगा।

बच्चों द्वारा चलाये इस आंदोलन में धीरे-धीरे बड़े भी जुड़ गये।

हमने एक 'गो-सुषमा मंडल' बनाया है, इसके सदस्य गौ-हत्यारी कंपनियों के पूर्ण बहिष्कार का संकल्प लेते हैं। मंडल इन्हें इनके गोरक्षक विकल्प; जैसे काढ़ा-चूर्ण, गोमय दंत-मंजन, चर्बी मुक्त सौंदर्य प्रसाधन,खून-हड्डी मुक्त गोमूत्र-औषधियाँ,जैविक आहार, घाणी का तेल, दूध-घी आदि उपलब्ध कराता है।

गायें पॉलिथीन की थैलियाँ खा-खाकर मर जाती हैं, इसलिए मैंने कपड़ों की थैलियों का प्रचार किया। इससे यह समस्या तो हल हो ही गई, कई गरीब महिलाओं को रोजगार भी मिल गया।

गौ-हत्यारी नीतियों के कारण गोपालक को एक गाय पर प्रतिदिन २० रु. अर्थात् हर वर्ष ७,००० रु. का नुकसान होता है। दूध देना बंद करने पर गाय पालना उसके लिए कठिन हो जाता है।

आंदोलन बढ़ते-बढ़ते महानगरों और विदेशों में भी पहुँच गया।

मैं अपने गाँव के गोपालक की एक गाय का सेवक बन हर वर्ष ७,००० रु. भेजूँगा।

मैं १० एकड़ जमीन खरीद उसे गोचर के रूप में विकसित करूँगा।

मैं हम जैसे १० गौ-सेवकों को जगाऊँगा।

मैं अपने गाँव के किसानों को बैलों से चलनेवाले ट्रैक्टर, मोटर, जनरेटर आधी कीमत पर उपलब्ध कराऊँगा।

यह तो सरकार पर जोर देकर भी कराया जा सकता है।

जिस तंत्र ने किसानों-गोपालकों को बर्बाद किया। उसका सहारा लेना, उसे बढ़ावा देना है। हमारे अन्नदाता को हम सहारा देंगे।

मैं बैलों की जोड़ी रखनेवाले किसानों को ५,००० रु. हर वर्ष दूँगा।

और इस तरह गाय को केन्द्र में रखकर स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों के माध्यम से भारत में भारतीय व्यवस्थाओं की स्थापना के लिए एक और आजादी की लड़ाई शुरू हुई। कंपनियों ने भी अपने अस्तित्व को खतरे में देख मायावी युद्ध शुरू कर दिया। उन्होंने क्या-क्या हथकंडे अपनाये और विद्यार्थियों ने कैसे उनका उत्तर दिया पढ़ें, गो-सुषमा (भाग-२)में।

भारतीय गोवंश की प्रजातियाँ

कृषि के लिए विकसित प्रजातियाँ - १६

पोंवार
(पीलीभीत - उ.प्र.)

केन्काठा
(ललितपुर, बांदा - उ.प्र.)

खेरीगढ़
(लखीमपुर, खेरी - उ.प्र.)

बच्छौर
(सीतामढ़ी - बिहार)

नागौरी
(नागौर - राजस्थान)

मालवी
(इंदौर, देवास,
उज्जैन -म.प्र.)

निमाडी
(खंडवा, खरगोन - म.प्र.)

लालकंधारी
(नांदेड़ - महाराष्ट्र)

खिल्लारी
(सातारा, सोलापुर,
सांगली -महाराष्ट्र)

कृष्णवेली
(बेलगाम - कर्नाटक,
सांगली-महाराष्ट्र)

हल्लीकर
(म्हैसूर,मण्ड्या
- कर्नाटक)

अमृतमहल
(हासन, चिकमगलूर
- कर्नाटक)

बारगुर
(पेरियार - तमिलनाडु)

कंगायम
(इरोड, दिंडीगुल
- तमिलनाडु)

उम्बाचेरी
(तंजावूर, दिन्डीगुल
- तमिलनाडु)

वेच्चूर
(कोट्टायम - केरल)

अमृतधारा गोशाला, श्रीरामचन्द्रपुर मठ (कर्नाटक)

पो. हनिया, त. होसनगर, जि.शिमोगा

प्रेरणा : परमपूज्य शंकराचार्य राघवेश्वर भारती
३० प्रजातियों का एक ही गोशाला में दर्शन

दूध के लिए विकसित प्रजातियाँ - ४

लाल सिंधी
(शासकीय व्यवस्था से)

राठी
(बीकानेर, श्रीगंगानगर - राजस्थान)

साहीवाल
(फिरोजपुर - पंजाब, श्रीगंगानगर - राजस्थान)

गिर
(जुनागढ़,भावनगर, अमरेली - गुजरात)

कृषि और दूध दोनों के लिए विकसित प्रजातियाँ - १०

हरियाणा
(रोहतक, हिसार - हरियाणा)

सीरी
(सिक्किम, प. बंगाल)

मेवाती
(अलवर, भरतपुर - राजस्थान)

थारपारकर
(कच्छ; बाडमेर, जैसलमेर - राजस्थान)

गवलाऊ
(बालाघाट,छिंदवाड़ा - मध्यप्रदेश)

कांकरेज
(कच्छ, मेहसाणा - गुजरात)

डांगी
(नासिक, अहमदनगर - महाराष्ट्र)

देवनी
(लातुर,परभणी,नांदेड़ - महाराष्ट्र)

पुंगानुर
(चित्तुर - आंध्रप्रदेश)

ओंगोल
(नेल्लोर, गुंटूर - आंध्रप्रदेश)

कंपनी तंत्र ने जर्सी की तुलना भारत की दूध के लिए विकसित प्रजातियों से न कर, पूरे देश को गुमराह किया और प्रचार किया कि भारत की गायें कम दूध देनेवाली हैं - ये भारत की अर्थव्यवस्था पर बोझ हैं, इसलिए ये कटती भी हैं तो कोई हानि नहीं है।

आधुनिक युग के कुछ पथ प्रदर्शक गोभक्त

१. स्व. नारायण देवधर पंढ़रीपांडे (नाडेप काका)

गोबर की लक्ष्मी को प्रकट करनेवाले वैज्ञानिक - अंगराग, गोधूपबत्ती, नाडेप कंपोस्ट के आविष्कारक।

२. स्व. गौरीशंकरजी माहेश्वरी

'The Cow Therapy' लिखकर पूरे विश्व का ध्यान देशी गाय की औषधीय एवं आर्थिक देन की ओर आकर्षित किया। घी को हानिकारक घोषित करनेवाले विज्ञान को गलत सिद्धकर घी का औषधीय महत्त्व समझाया। हृदय की बायपास सर्जरी से श्रेष्ठ (ब्लोकेज ०% करना), सरल (घर बैठे) व सस्ते (५% खर्च) विकल्प का आविष्कार किया। कैंसर पर सफल प्रयोग किया। नाडेप काका और रेवाशंकरजी के प्रयोगों को देश-विदेश में फैलाया और गाय के उत्पादों को एक विशाल बाजार उपलब्ध कराया।

३. राजवैद्य श्री रेवाशंकरजी शर्मा, रटलई, झालावाड़ (राजस्थान)

गौमूत्र को महौषधि सिद्ध किया व उससे गोली/अर्क बना नगरवासियों को भी गोमूत्र का लाभ दिलाया।

४. श्री केसरीचंदजी मेहता, मालेगाँव, धुलिया (महाराष्ट्र)

गोरक्षा संबंधी कानूनी सलाह। मुंबई महानगरपालिका द्वारा लायसन्स दिये गये ६०० कत्लखानों के लायसेन्स कोर्ट से रद्द करवाये। लाखों गायों को कटने से बचाया। कानून में सुधार करवाकर करोड़ो जीवों को हत्या से बचाया। बलसाड़ (गुजरात)में ८० पलंग के कैंसर हेतु पंचगव्य अस्पताल के मार्गदर्शक

०९८२३० १६८६०, ०२५५४ - २३०८४९ (सुबह ९ से ११, दोपहर ३ से ५)

५. श्री सुभाषजी शर्मा, छोटी गुजरी, यवतमाल, ४४५ ००१९ (महाराष्ट्र)

प्रतिदिन १०० किसानों को गौ आधारित समृद्ध कृषि का प्रशिक्षण। सब्जियो के खेती के विशेषज्ञ। खेती से तिगुनी मजदूरी पाने के नुस्खों का प्रशिक्षण।

०९४२२८ ६९६२० (सुबह ८ से ९, रात ९ से १०)

विभिन्न शहरों में गो-सुषमा प्राप्ति हेतु संपर्क सूत्र

१. प्रमुख गोशालायें २. राजस्थान - जयपुर - प्रज्ञा साधना आध्यात्मिक पुस्तक केन्द्र (श्री सुशील तांबी)- ९८२९५ ४७७७३/२२३३७६५; जोधपुर-श्री त्रिलोक राठी ९४६०१ ०६१४७ / २६३६०४७; भीलवाडा - श्री सुनील आगीवाल ९४१४१ १२९४७; कोटा - श्री संजीव झा - ९४१४९ ६६४१४; ३. छत्तीसगढ़ - भिलाई - श्री अनूप बंसल ९४२५२ ४५८०७; ४. महाराष्ट्र - नागपुर - श्री अतुल देशमुख ९३७३१०६४३५; अमरावती - श्री राजकुमार बरडिया ९४२२१ ५८५९०; नासिक - श्री निशिथ माहेश्वरी ९०९६२ ४३६४९ - ५. गुजरात - बड़ौदा - श्री अर्केश जोशी ९९२५९ ५९५९२; राजकोट - श्री वेलजीभाई देसाई ९२२७६ ०६५७०; ६. कर्नाटक - बैंगलोर - श्री हीरालाल शर्मा ९३४११२२८००; ७. मध्यप्रदेश - रतलाम - श्री मोहनलाल पिरोदिया ९४२५१०३७७२; ८. प. बंगाल - कोलकाता - श्री अज़य बोथरा ९३३१२४५२३३; ९. बिहार - पटना - योगीराज संजीव सिन्हा ९३३४० १७१६३; १०. अमेरिका - ह्युस्टन - श्री अरुण कंकाणी ००१२८१४३५५०७१

सुषमा संस्था प्रकाशन

गौ रक्षक दल

गौ सुषमा

ऐ सनातनी !

क्या आधुनिकता
की चका–चौंध ने
तुझे इतना अन्धा कर
दिया कि मेरा दुख
दर्द तुझे दिखाई
नही देता ?

नपुंसकता त्यागे
गौमाता
को बचाये

अपने सुझाव इस पते पर भेजे !
www.shreshthbharat.in/contact